इकाई १:
डिजाइन का परिचय

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप निम्नलिखित में समर्थ होंगे:–

- डिजाइन को परिभाषित करने में
- डिजाइन की परिधि को समझने में
- डिजाइन के अवयवों को समझने और उसका मूल्यांकन करने में
- डिजाइन में रेखा की भूमिका का वर्णन करने में
- रंग, रंग चक्र, रंग योजनाओं और रंग संयोजन की भूमिका और उससे संबंधित शब्दावली का वर्णन करने में
- डिजाइन में अभिविन्यास से संबंधित भूमिकाओं और शब्दावली का वर्णन करने में
- डिजाइन के आधारभूत सिद्धांतों के रूप में सदृश्यता, अनुपात, पुनरावृत्ति, संतुलन, सामंजस्य, सन्निकटता और बल की भूमिका को समझने और उसका मूल्यांकन करने में
- क्रोकी की भूमिका तथा डिजाइनरों और फैशन चित्रकारों द्वारा परिधान उद्योग में इसके प्रयोग को समझना
- महिलाओं, पुरुषों और बच्चों की फैशन आकृतियों पर परिधान डिजाइनों का प्रतिनिधित्व करने के लिए आधारभूत चित्रकला कौशल विकसित करने में

'व्यक्ति को या तो कला की कृति होना चाहिए अथवा कला की कृति को पहनना चाहिए।''
–ऑस्कर वील्ड

1.1 डिजाइन की परिभाषा

'डिजाइन' शब्द का मूल डिसेग्नेर (फ्रेंच) है जिसका अर्थ है 'सृजन करना' या 'बनाना'। इसका आशय यह है कि डिजाइन करना। किसी विनिर्दिष्ट कार्य को करने अथवा उसे समाप्त करने के लिए समाधान तलाशने के प्रयोनार्थ मस्तिष्क में उसकी परिकल्पना करना और उसकी योजना बनाना है। मानव द्वारा बनाई गई प्रत्येक वस्तु डिजाइन है, चाहे वह परिधान हो, वस्त्र हो, उत्पाद हो, घर हो, सार्वजनिक स्थल हो या फिर और भी कुछ क्यों न हो। जो व्यक्ति विशेषज्ञतापूर्ण डिजाइन क्षेत्रों में डिजाइन तैयार करता है, वह डिजाइनर होता है जिसे फैशन डिजाइनर (वस्त्रों को डिजाइन करने वाला), परिधान डिजाइनर (प्रदर्शन कलाओं जैसे नाटक और फिल्मों के लिए डिजाइन करने वाला), आंतरिक साज–सज्जा डिजाइनर (निजी और सरकारी स्थानों का डिजाइनर), ग्राफिक डिजाइनर (संचार के लिए विभिन्न स्वरूपों के दृश्यात्मक प्रतीक का डिजाइनर) आदि कहा जाता है। न्यू वेबसटर्स इंटरनेशनल इन्साइक्लोपीडिया 1998 डिजाइन को इस प्रकार परिभाषित करता है ''किसी सृजनात्मक कार्य अथवा प्रक्रिया में अवयवों को उद्देश्यपूर्ण ढंग से व्यवस्थित किया जाना। मोटे तौर पर, डिजाइन का उद्देश्य सामंजस्यपूर्ण निष्पादन में कार्यों और सौंदर्य का एकीकरण करना है।''

डिजाइन सृजनात्मक समस्या निवारण भी है। डिजाइन का केन्द्रबिंदु कोई सेवा, संप्रेषण और परिवेश हो सकता है। यह आवश्यक है कि डिजाइन में सौंदर्य–संबंधी और नृजातीय विचारणों, उपयोगिता और विपणन को ही ध्यान में रखना चाहिए। इसका आशय यह है कि डिजाइन केवल सृजनात्मक क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि

व्यापार और सामाजिक परिवेश में भी सीमित है।

1.2 डिजाइन के अवयव

किसी फैशन शो के अनुभवों का अवलोकन अथवा वर्णन करते समय, डिजाइनों की प्रशंसा मंच की साज–सज्जा, प्रकाश व्यवस्था, संगीत और नृत्य–निर्देशन द्वारा वहां उपस्थित किए गए परिदृश्य के फलस्वरूप अत्यधिक भव्य हो जाती है। इस प्रकार, कपड़ों, परिधानों, अन्य पोशाक संबंधी उपांगों तथा फैशल जीवन–शैली उत्पादों का सौंदर्य उनके संघटक अवयवों पर निर्भर करता है। वैयक्तिक इकाइयां साथ–मिलकर डिजाइन के अवयव कहलाती हैं तथा उस शैली के प्रति योगदान देती है जिसमें डिजाइनों की परिकल्पना और परिबोध किया जाता है। ये किसी भवन के आधारभूत खण्डों की भांति होते हैं जहां प्रत्येक अवयव समस्त कार्य का ही एक भाग होता है तथा एक–दूसरे के साथ सामंजस्य रखता है। डिजाइन के अवयव हैं – बिंदु, रेखा, आकृति, विन्यास और रंग।

1.2.1 बिंदु

डिजाइन की समझ बिंदु से आरंभ होती है। यह स्थान के संदर्भ में किसी स्वरूप को समझने के लिए एक साधारण परंतु आधारभूत अवयव है। यह किसी सुई के नोक, किसी पेंसिल के सिरे अथवा किसी सुदूरवर्ती सितारे की भांति छोटा हो सकता है। विराम–चिह्न विधान के संदर्भ में, पूर्ण विराम एक ऐसा बिंदु है जो किसी वाक्य को पूर्ण करता है और उसे अर्थ प्रदान करता है। गणित में बिंदु का कोई आयाम नहीं होता है अर्थात् इसकी कोई लंबाई, चौड़ाई अथवा परिमाण नहीं होता है। किसी खाली पृष्ठ पर लगा हुआ बिंदु न केवल अपनी उपस्थिति से बल्कि उस पृष्ठ पर अपनी स्थिति के कारण भी ध्यान आकर्षित करता है। जब वहां दो बिंदु होते हैं, वे हमारी आंखे एक 'रेखा' के रूप में उन दोनों के बीच एक संबंध स्थापित कर लेती है। जब तीन बिंदुओं को मिला दिया जाता है, तो ये एक आकृति का रूप ग्रहण कर लेते हैं। कुल कला स्वरूपों में, चित्रकारी बिंदुचित्रण (स्टिप्लिंग) नाम तकनीक का प्रयोग करते हुए की जाती है जहां बिंदुनुमा रेखाओं की श्रृंखलाएं वस्तुओं का प्रतिनिधित्व कर सकती हैं।

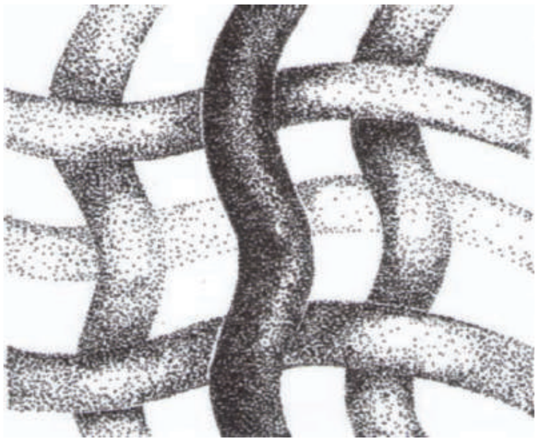

चित्र 1.1 बिंदुचित्रण (स्टिप्लिंग)

अनेक चित्रकारों जैसे जॉर्जेस सेयूरैट ने चित्रों का सृजन करने के लिए रंग के पुचारों जैसे एक–दूसरे के समीप रखे गए बिंदु (उन्हें परस्पर मिश्रित करने के स्थान पर) का प्रयोग करते हुए वैज्ञानिक रंग सिद्धांतों का अनुप्रयोग किया तथा उनकी इस तकनीक को पाइंटिलिज्म कहा गया।

चित्र 1.2 जॉर्जेस सेयूरैट द्वारा 1884 में निर्मित ए संडे ऑन ला ग्रेंडे जैटे

1.*2.2 रेखा*

समस्त डिजाइन अवयवों में से रेखा सर्वाधिक बुनियादी अवयव है। बच्चों द्वारा कागज पर क्रेयन्स/पेंसिलों द्वारा बनाए गए प्रारंभिक चित्र रेखीय होते हैं। बच्चों की पुस्तकों अथवा कॉमिक पुस्तकों में तस्वीरों की रूपरेखा सामान्यतः एक समान तथा काले रंग में सुपरिभाषित होती है।

चित्र क चित्र ख

चित्र 1.3 क. पेन के साथ अनवरत रेखाओं के चित्रण के रूप में एक पुष्प के स्वरूप का प्रतिबिंबन

चित्र 1.3 ख. रेखीय बाह्य रचना के बिना स्वरूप के प्रतिबिंबन के लिए वाटरकलर का प्रयोग

चित्र 1.5 लैसकॉक्स, फ्रांस में गुफा

चित्र सी 15,000–10,000 बीसीइ

सीधी रेखाएं 'रेखीय' कहलाती है तथा आड़ी–तिरछी रेखाएं 'वक्रीय' कहलाती है। चित्रकार दृश्यात्मक रुचि का सृजन करने के लिए रेखा की गुणवत्ता (मोटाई और विविधपूर्ण दबाव) में परिवर्तनों का प्रयोग करते हैं।

चित्र 1.4 चारकोल पेंसिल के साथ विविध रेखीय गुणवत्ता

लैसकॉक्स, फ्रांस में पाई गई आदि मानव द्वारा निर्मित गुफा–चित्र मानव और पशुओं के रेखीय प्रतिबिंबन हैं।

गणित में, कोई रेखा दो बिंदुओं के बीच लघुतम दूरी है। रेखाएं एक–आयामी होती हैं अर्थात् उनकी लंबाई और दिशा तो होती है परंतु मोटाई नहीं होती। रेखाओं में उल्लेखनीय रूप से विशाल वस्तुओं और स्थानों का प्रतिनिधित्व करने की योग्यता होती है, उदाहरण के लिए मानचित्र सड़कों तथा अन्य विवरणों के साथ समूचे राष्ट्र अथवा विनिर्दिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों(राज्यों/कस्बों/शहरों) का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं।

किसी रेखा में औपचारिक, अभिव्यक्तिपूर्ण और सांकेतिक विशेषताएं होती हैं:

I. रेखा की औपचारिक विशेषताओं का आशय हैः–

I रेखा का प्रकार

ii. रेखा की गुणवत्ता

iii.रेखा की दिशा

I रेखा का प्रकार

रेखा के दो प्रकार होते हैं – वास्तविक और सांकेतिक

वास्तविक रेखा वह रेखा है, जो परिधान में वास्तव में विद्यमान होती है:

- वस्त्र में प्रिंट के रूप में (दृश्यमान)
- सीवन के रूप में जो वस्त्र के टुकड़ों को एक साथ जोड़ती है (तकनीकी)स
- ऊर्ध्व/क्षैतिज/विकर्णी चुनटों/तहों के रूप में (सतह के महत्व की)

सांकेतिक रेखा वह रेखा है जो वास्तव में विद्यमान नहीं होती है – यह मात्र एक चाक्षुक भ्रम होता है। कभी–कभी, भंगिमा बनाते हुए हम किसी बिंदु का वर्णन करते हुए हमा में एक रेखा 'खींच' देते हैं। किसी कागज पर अनेक बिंदुओं की श्रृंखला एक रेखा का संकेत प्रदान करती हैं क्योंकि मुनष्य की आंख मस्तिष्क एक रेखा का 'सृजन' करने के लिए उन्हें परस्पर जोड़ देता है। उदाहरण के लिए, रेखाचित्र में प्रयुक्त की गई मानव के शरीर की रूप–रेखा एक सांकेतिक रेखा है क्योंकि शरीर की वास्तव में कोई रूपरेखा नहीं होती है

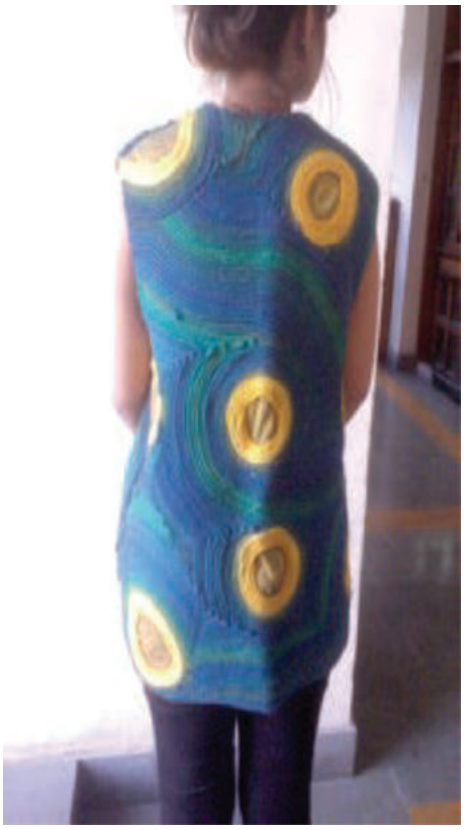

चित्र 1.6 ख. नम्रता जोशीपुरा के ग्रेजुएटिंग डिजाइन संग्रहण से एक जैकेट

चित्र 1.6 क. विसेंट वैन गोह, साइप्रेसेस 1889 उसकी लहराती रेखाओं में ऊर्जा और गतिशीलता है जो हवा की दिशा और वेग को दर्शाती हैं।

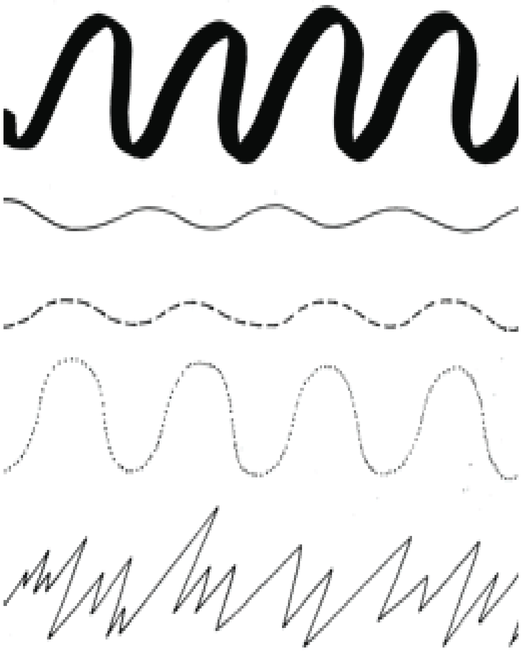

चित्र 1.7 चौड़ाई (लाइन की मोटाई) तथा प्रकार (बिना टूटी रेखाएं वास्तविक रेखाएं हैं) जबकि टूटी/बिंदुदार रेखाएं सांकेतिक रेखाएं हैं) के संदर्भ में रेखाओं का दृश्यात्मक उदाहरण

ii. रेखा की गुणवत्ता : रेखा की गुणवत्ता, जो रेखाचित्र के लिए अनिवार्य है, रेखा की लम्बाई, चौड़ाई और रेखा की मोटाई एवं दिशा की एकरूपता द्वारा सृजित की जाती है।

चित्र 1.8 मनीष त्रिपाठी द्वारा अंतर्देशी की जैकेट जिसमें कॉलर एज के साथ चौड़ा फ्लैट बैंड भी है।
चित्र 1.9 अर्जुन कुमार द्वारा अर्थन कैनवास की कमीज जिसमें केन्द्र–बिंदु के साथ महीन पाइपिंग है।

रेखा की लम्बाई, चौड़ाई और रेखा की ।

लंबाई का मापन किया जा सकता है भले ही यह लंबी हो अथवा छोटे भागों में 'टूटी' हुई। लंबी रेखाएं आंखों को आसानी के साथ उन्हें अंत तक देखने में समर्थ बनाती है जबकि छोटी रेखाएं आंखों के संचलन में बाधा डालती है, अतः वे वस्त्र को छोटा दिखाती हैं।

चौड़ाई का आशय है रेखा की मोटाई अथवा पतलापन। वस्त्र पर मशीन द्वारा सिली गई एक रेखा एक पतली रेखा का सृजन करती है जबकि फ्लैट पाइपिंग/बैंड एक वृहद रेखा का सृजन करती है।

भार से आशय है रेखा का 'दृश्यमान भार'। एक मोटी, समतल, अपारदर्शी धारी एक महीन धारी अथवा किसी वस्त्र/परिधान पर स्वतः बुनी गई धारी की तुलना में दृश्यमान रूप से भारी लगती है।

किसी रेखा की सदृश्यता का आशय है समस्त लम्बाई के साथ–साथ रेखा की समान चौड़ाई।

iii. रेखा की दिशा किसी ऊर्ध्व, क्षैतिज अथवा विकर्णी तरीके से उस रेखा का संचलन है। इसके अलावा, कोई रेखा सीधी (जब दो बिंदुओं को जोड़ने के लिए न्यूनतम मार्ग का प्रयोग किया गया हो) लहरदार, टेढ़ी–मेढ़ी अथवा घुमावदार भी हो सकती है।

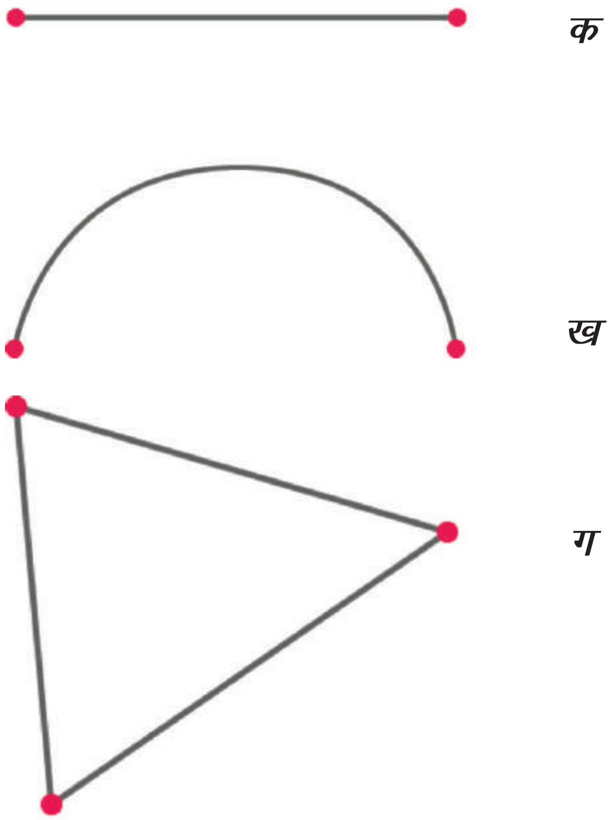

चित्र 1.10 बिंदुओं को जोड़ कर बनाई गई (क) सीधी रेखा (ख)घुमावदार रेखा और (ग) त्रिभुज

II. रेखा की अभिव्यक्तिपूर्ण विशेषताएं सतह पर संचलन और ऊर्जा का चित्रण करती हैं। उदाहरण के लिए, एक ऊर्ध्व रेखा स्थिर शक्ति (जो सीधी हो) को प्रतिबिंबित करती है। इसी प्रकार एक क्षैतिज रेखा खामोश और शांत होती है। एक शांत समुद्र अत्यंत क्षैतिज सपाट भूमि के समान प्रतीत होता है तथा वह शांति प्रदान करता है। एक विकर्णी रेखा शक्ति और ओज का प्रतीक होती है। चार्टो और आरेखों में विकर्णी रेखा विकास की बढ़ती दर का सूचक होती है।
संचलन तथा ऊर्जा ऐसे पहलू हैं जो दो प्रकार की रेखाओं द्वारा दर्शाए जाते हैं, स्थिर और गतिशीलः

- स्थिर रेखा एकल, सीधी, चौड़ाई में एक समान तथा एक ही दिशा की ओर जाने वाली होती है। सीधी रेखाएं चाहे वे क्षैतिज हों या ऊर्ध्व, स्थिर होती हैं।
- एक गतिशील रेखा वह है जो अपनी दिशा और चौड़ाई में परिवर्तन करती है। कोणीय और लहरदार, दोनों ही रेखाएं गतिशील होती हैं। रेखाचित्रों में बिजली के कड़कने को आकाश में गतिशील (टेढ़ी–मेढ़ी) रेखा के रूप में चित्रित किया जाता है।

क ख

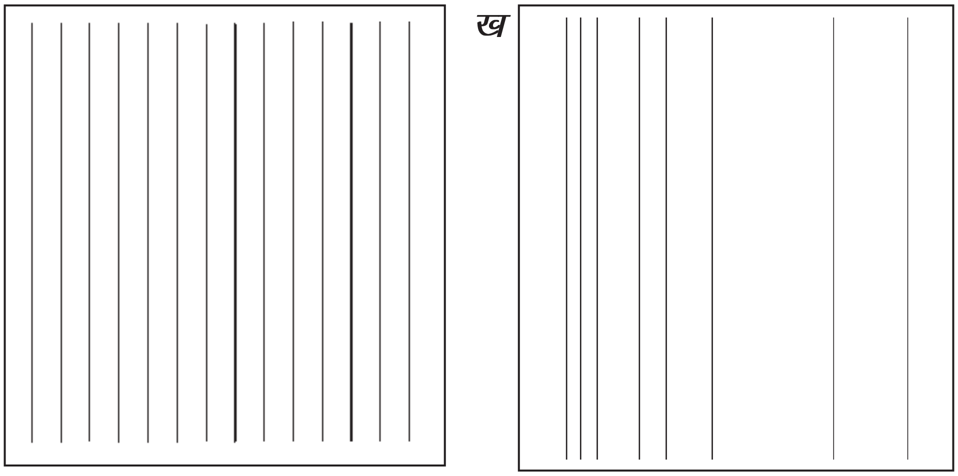

चित्र 1.11 हालांकि दोनों ही रेखाएं ऊर्ध्व हैं, समान दूरी की रेखाएं (क) विविध चौड़ाई और दूरी की रेखाओं (ख) की तुलना में अधिक स्थिर है

ग घ

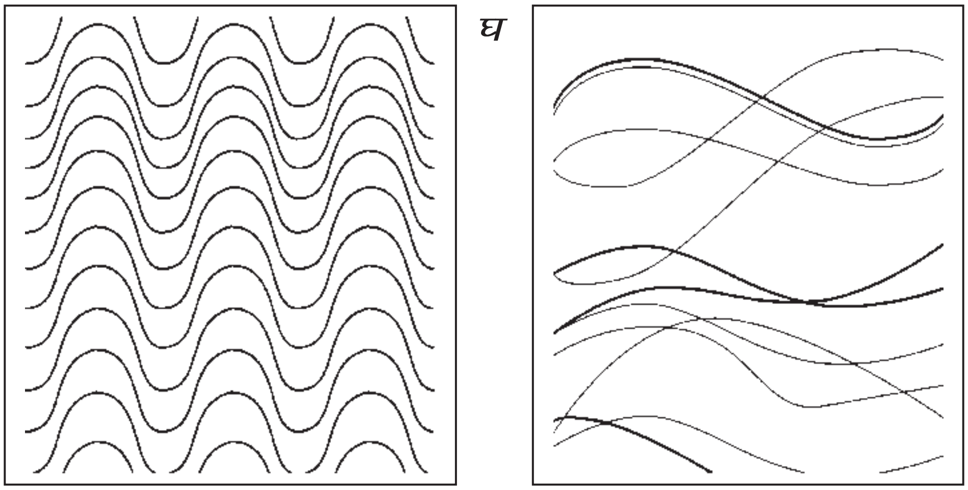

चित्र 1.12 हालांकि दोनों ही रेखाएं लहरदार और गतिशील होती हैं, समान दूरी की रेखाएं (ग) आराम पहुंचाती हैं, जबकि अनियमित रेखाएं (घ) व्यवधान का प्रतिनिधित्व करती हैं।

ड़

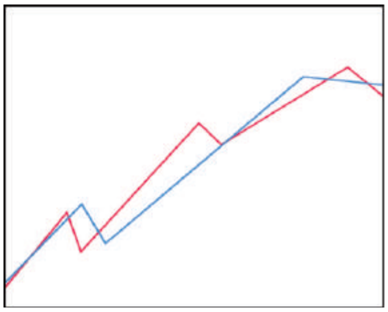

चित्र 1.13 टेढ़ी–मेढ़ी रेखाएं गतिशील होती हैं तथा प्रायः वे ग्राफ में दिशा का संकेत देती हैं।

III. रेखा की सांकेतिक विशेषताएं किसी भौतिक उत्पाद के वास्तविक चित्रण के बिना भी अर्थ संप्रेषित करती हैं। उदाहरण के लिए, सड़क के संकेत जैसे पैदल चलने वालों की सुरक्षा के लिए जेब्रा क्रासिंग ने समूचे विश्व में एक अर्थ को ग्रहण किया है।

रेखाएं निम्न के माध्यम से संकेत बन सकती हैं:–

- किसी उत्पाद/सेवा का प्रतिनिधित्व उदाहरण के लिए समान लंबाई की ऊर्ध्व और क्षैतिज एक–दूसरे को काटती लाल रेखाएं (रेड क्रॉस) चिकित्सा सहायता का प्रतिनिधित्व करती हैं।
- अक्षर और अंक (उदाहरण के लिए भाषा) तथा चित्रलिपियां (उदाहरण के लिए प्रचीन चित्र की चित्रलिपि) जो अर्थ संप्रेषित करते हुए किसी लिखित अथवा अंकीय स्वरूप में हो।
- लेबलों, पैकेजिंग तथा विज्ञापन पर संकेतों को चित्रित करती हुए कैलीग्राफी (सुलेखन) और टाइपोग्राफी (मशीन टाइप–सेट)।

परिधानों पर रेखाओं का अनुप्रयोग

I. विवरण : परिधानों पर रेखाएं डिजाइन का आधार होती हैं चाहे वे पैटर्न के टुकड़ों को जोड़ने वाली सिलाई के रूप में हो या डिजाइन के विवरणों, सतह की सजावट के रूप में हो या डिजाइन के विवरणों, सतह की सजावट अथवा प्रिंट के द्वारा हों। परिधान के संदर्भ में, सिलाई, पाइपिंग, शीर्ष–सिलाई, तहें और चुनटें रेखीय होती हैं। डिजाइनरों द्वारा सृजनात्मक तरीके से रेखाओं का प्रयोग किया जाता है, कुछ समांतर रेखाएं सृजित करने के लिए

चित्र 1.14 राजेश प्रताप सिंह की कमीज जिसमें क्षैतिज पिनटक्स है

चित्र 1.15 मार्च 2008 में आयोजित विल्स इंडिया फैशन वीक में गौरव गुप्ता का परिधान/परिधान में मौजूद चुनटें आच्छादित की गई हैं ताकि वे शरीर के ढवन के इर्द–गिर्द बहु–आयामी रेखीय प्रवाह सृजित कर सकें।

सीधी सीवन और पिन–चुनटों का प्रयोग करते हैं जबकि अन्य असममित सतह प्रभाव सृजित करने के लिए वक्रीय रेखाओं का प्रयोग करते हैं।

सीधी रेखाएं संरचनाबद्ध परिधानों जैसे पुरुषों और महिलाओं के लिए सूट को उत्कृष्टता, स्वच्छता और चटकपन प्रदान करती है। वक्रीय रेखाएं ऊर्जावान और

चित्र 1.16 स्प्रिंग समर 2008 में आयोजित विल्स इंडिया फैशन वीक में प्रशांत वर्मा का परिधान। पोशाक की सतह पर सीधी रेखाओं तथा श्वेत–श्याम रंग में ज्यामिती आकृतियों की उत्कृष्टता है। वक्रीय तरफ वाला पैनल रंगीन है।

प्रफुल्लता से परिपूर्ण होती हैं तथा उन्हें बच्चों के वस्त्रों में वक्रीय किनारे की पंक्तियों जैसी संरचनाओं में व्यापक रूप से देखा जा सकता है।

II. **चाक्षुक भ्रम :** विभिन्न अनुपातों में शरीर के 'विभाजन' के माध्यम से फैब्रिक प्रिंट चाक्षुक भ्रम भी उत्पन्न कर सकता है। यह व्यक्ति के शरीर का आदर्श प्रकार प्राप्त करने के लिए उसे पहनने वाले को अपेक्षाकृत लंबा, अथवा छोटा, छरहरा अथवा मोटा, महीन अथवा घुमावदार दिखने में सहायता कर सकता है। इसे इस तथ्य द्वारा समझा जा सकता है कि आंखे लंबाई के साथ–साथ ऊर्ध्व दिशा में

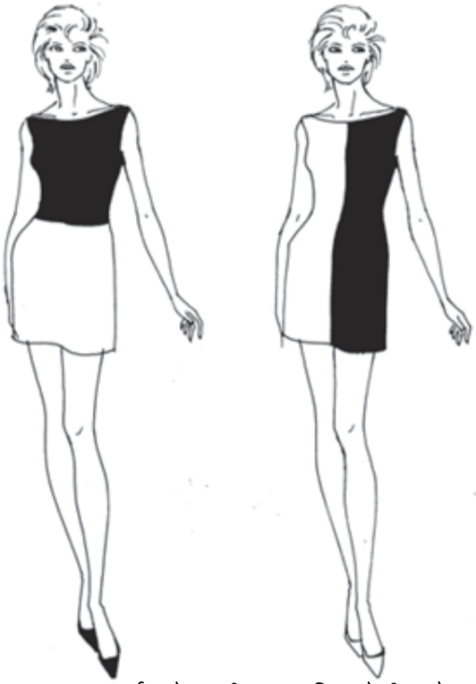

चित्र 1.17 बाईं ओर की आकृति छोटी और चौड़ी प्रतीत होती है क्योंकि लंबाई को दो भागों में बांटा गया है जिससे आंखें क्षैतिज दिशा में चलती है, तथा इसकी तुलना में दाहिनी आकृति लंबी और पतली प्रतीत होती है क्योंकि आंखें ऊर्ध्व दिशा में चलती हैं।

चलती हैं जिससे व्यक्ति लंबाई दिखाई पड़ता है। चौड़ी क्षैतिज धारियां व्यक्ति को चौड़ा दिखने में मदद करती हैं।

1.2.3 आकृति

आकृतियां ऐसे रूप हैं जिन्हें रेखाओं द्वारा सृजित किया जाता है जो लंबाई, चौड़ाई और गहराई के साथ बंद स्थानों को सृजित करती हैं अर्थात उनके स्थान में निश्चित मात्रा और स्थिति होती है। आकृति सामान्यतः आधारभूत ज्यामितीय आकृतियों (वृत्त, वर्ग, त्रिभुज, आयात, गोलाकार, बेलनाकार, शंकु और धन) तथा उनकी विविधता पर आधारित होती हैं।

परिधान में, सिलुएट (पार्श्वछायाचित्र) शब्द का प्रयोग परिधान की रूपरेखा का वर्णन करने के लिए किया जाता है। यह एक स्पष्टतः परिभाषित और विशिष्ट सीमा–रेखा की नीति है जो परिधान को उसके आस–पास के परिवेश से अलग करती है। फैशन का इतिहास यह दर्शाता है कि सिलुएट की लोकप्रियता बढ़ी तथा धीरे–धीरे कम हो गई जिसमें 'फैशन चक्र' की लय में निरंतर उतार–चढ़ाव आता

रहा। आकृति अथवा सिलुएट का आशय है, बिना किसी संरचनात्मक विवरण के वस्त्र की रूपरेखा। विभिन्न सिलुएट हैं – आवरग्लास, ट्यूबुलर, बैल, वेज, ए–लाइन और कोकून।

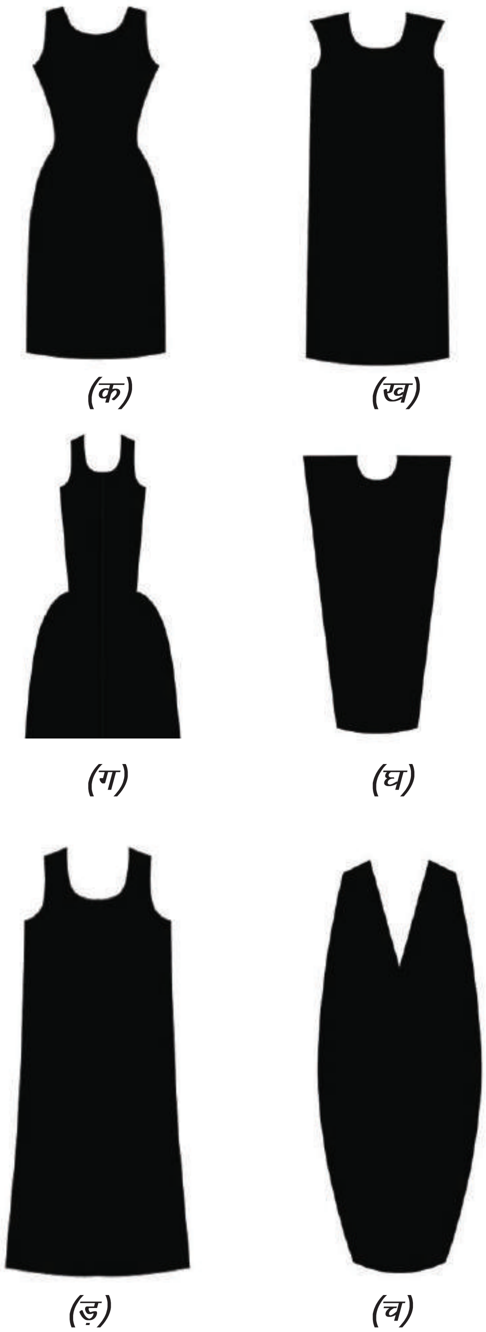

चित्र 1.18 सिलुएट – (क) आवरग्लास (ख) ट्यूबुलर (ग) बैल (घ) वेज (ड.) ए–लाइन और (च) कोकून

- **आवरग्लास सिलुएट** वह है जहां कंधे और कूल्हे लगभग समान होते हैं और कमर संकीर्ण होती है।
- **ट्यूबुलर सिलुएट** में बेलनाकार आकृति होती है जिसमें कंधों, कमर अथवा कूल्हों पर बल प्रदान नहीं किया जाता है।
- **बैल सिलुएट** में कमर तक कसी हुई कुरती होती है जो बाद में एक पूर्ण स्कर्ट के रूप में खुलती है।
- **वेज सिलुएट** कंधों पर वी–आकार में चौड़ी होती है तथा कमर तक धीरे–धीरे किनारे से संकीर्ण होती जाती है।
- **ए–लाइन सिलुएट** कंधों से कमर तक खुलती है तथा कमर में कोई बल प्रदान नहीं किया जाता है।
- **कोकून सिलुएट** कंधों और कमर में संकीर्ण होती है तथा कमर के आस–पास चौड़ी होती है।

आयाम के रूप में आकृति

फैशन का चित्रण द्विआयामी होता है परंतु यह दर्शाता है कि शरीर त्रि–आयामी होता है। शरीर पर, कोई परिधान वास्तव में त्रि–आयामी स्थान ग्रहण करता है अर्थात् जब इसे पहना जाता है, तो इसमें लंबाई, चौड़ाई और परिमाण तीनों आयाम होते हैं। परिधान को शरीर की पूर्णता अथवा इसके चुनिंदा भागों पर बल प्रदान करने अथवा प्रदान न करने के लिए डिजाइन किया जाता है। यह आदर्श शरीर तथा डिजाइनर के सौंदर्य विज्ञान की विद्यमान अवधारणा पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए, कमर को 'छोटा' बनाने के लिए कमर को कसा जा सकता है और इस प्रकार एक वक्रात्मक सिलुएट का सृजन किया जाता है। इसी प्रकार, कंधों को चौड़ा दिखाने के लिए कंधों को तहदार बनाया जा सकता है।

रेखाएं सीवन, शीर्षस्थ सिलाई, चुनटों आदि के माध्यम से किसी परिधान की समग्र आकृति को छोटे क्षेत्रों में सीमांकित करती है। किसी पोशाक पर 'बेल्ट' अथवा कमर–पट्टिका शरीर को दो लगभग वर्गाकार हिस्सों में

कमर–पट्टिका शरीर को दो लगभग वर्गाकार हिस्सों में 'बांटती' है। डिजाइन की संरचनाएं जैसे आयताकार पैनल, गोल नेकलाइनें और कॉलर, वर्गाकार जेबें, त्रिभुजाकार कलियां इसे आगे और आकृति प्रदान करती हैं।

वस्त्रों के मोटिफ विभिन्न आकृतियां सम्मिलित करते हैं जिन्हें विभिन्न प्रकार से वर्णित किया जा सकता है:

- **यौगिक आकृतियां** वास्तविक अथवा शैलीकृत तरीके में प्रतिबिंबित प्राकृतिक स्वरूपों से प्रेरणा प्राप्त करती हैं।
- **ज्यामितीय आकृतियां** वे हैं जो बुनियादी स्वरूपों को प्रतिबिंबित करती हैं जैसे वृत्त, आयात, वर्ग और त्रिभुज जिनका संयोजन विभिन्न वैविध्य सृजित कर सकता है। यह ज्यामितीय रूप से निरूपित की जाने वाली प्राकृतिक आकृतियों के लिए भी संभव है।

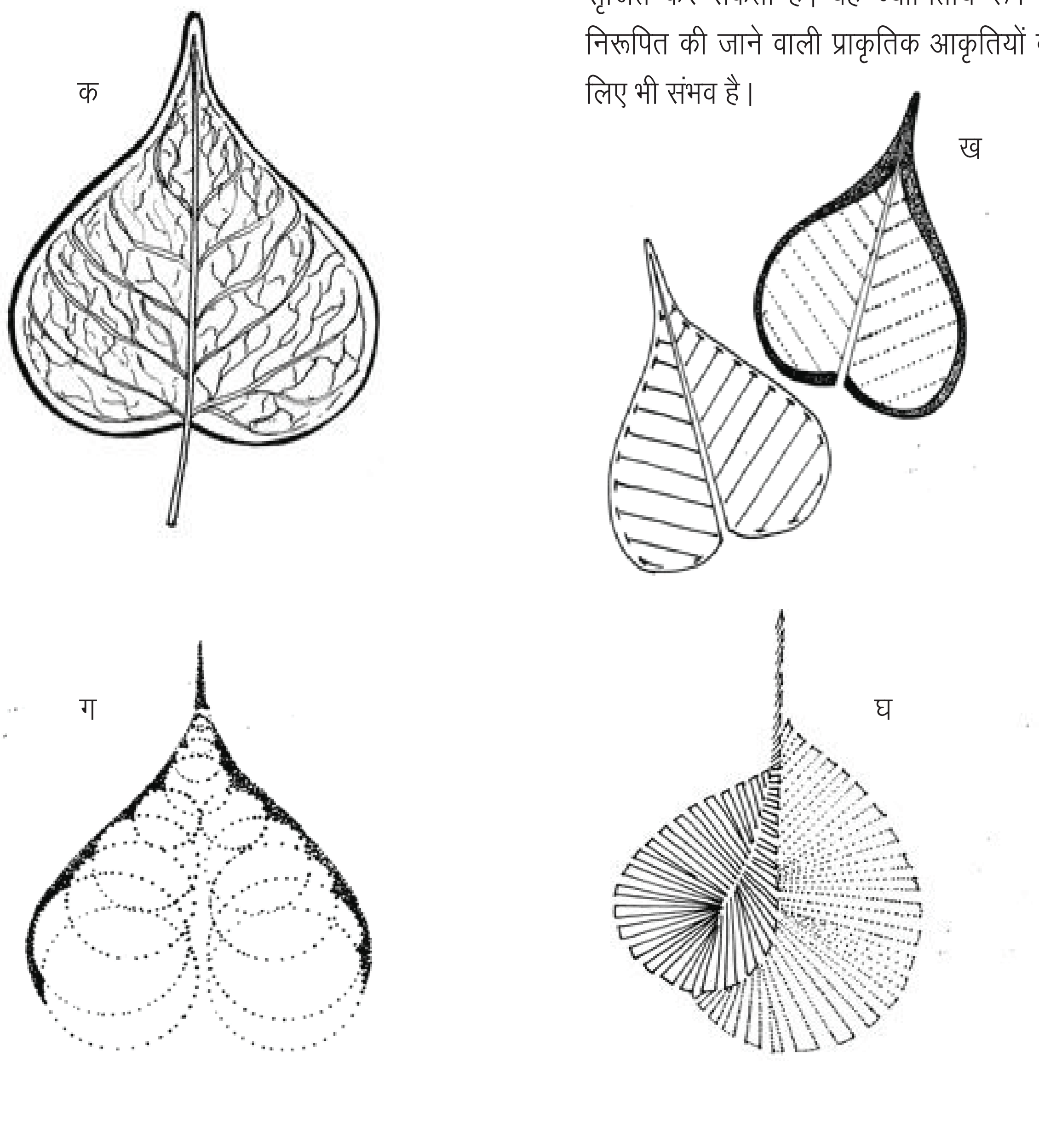

चित्र 1.19 लीफ मोटिफ का निरूपण –(क), प्राकृतिक (ख), ज्यामितीय (ग), मूर्त (घ),शैलीकृत

पैटर्न के रूप में आकृति

जब आकृतियों को योजनाबद्ध अंतरालों पर रखा जाता है, तो इसे व्यवस्थित पैटर्न कहा जाता है, उदाहरण के लिए चारखाने और बिंदु। जब आकृतियां जैसे प्रिंट बिना किसी दृश्यमान क्रम के रखी जाती हैं, तो इन्हें यादृच्छिक पैटर्न कहा जाता है, उदाहरण के लिए एनिमल प्रिंट।

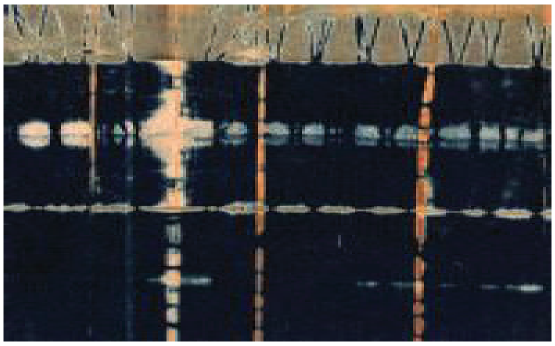

चित्र 1.20 आकृतियों और अभिविन्यासों के उदाहरण। (क) हाउंड्स टूथ चैकों के रूप में ज्यामितीय पैटर्न, (ख) डेनिम पर टाई एंड डाई तकनीक (ग) एनिमल प्रिंट के रूप में यादृच्छिक पैटर्न

1.2.4 तंतु विन्यास

परिधान डिजाइन की संरचना वस्त्र के तंतु–विन्यास द्वारा भी प्रभावित होती है जो उसे पहनने वाले को सौंदर्य–संतुष्टि प्रदान करने में योगदान देता है। डिजाइनरों और उपभोक्ताओं के लिए, त्वचा में वस्त्र की छुवन की शारीरिक अनुभूति उसके दृश्यमान प्रभाव के समान ही महत्वपूर्ण होती है। कुछ लोग विद्युत करघा के वस्त्र जैसे साटन की कोमलता को पसंद करते हैं जबकि अन्य हाथ से बुनी खादी के स्पर्श को बेहतर मानते हैं। पुरुषों के लिए ऊनी सूटिंग जैसे वस्त्रों की मुलायम, ठोस सतह होती है जबकि बुने हुए स्वेटरों की नरम, नम्य ''हाथ का स्पर्श'' होता है।

तंतु–विन्यास या तो वास्तविक होते हैं अथवा **विवक्षित:**

विवक्षित तंतु–विन्यास: विवक्षित तंतु विन्यास को 'दृश्यमान तंतु–विन्यास' भी कहा जाता है तथा ये उस आभास के प्रति योगदान देते हैं जिससे आंख वस्त्र की सतह की 'परिकल्पना' करती है कि वह समतल है अथवा त्रि–आयामी। दूसरे शब्दों में, दृश्यमान तंतु–संरचना को स्पर्शनीय विशेषता रखते हुए 'देखा' जा सकता है परंतु इसमें स्पर्श के माध्यम से शरीर द्वारा महसूस नहीं किया जा सकता है। जब हम वस्त्र को छू नहीं सकते हैं, हमारी आंखें त्वचा के विकल्प के रूप में कार्य करती है, जिसके फलस्वरूप हम वस्त्र की 'कल्पना' कर सकते हैं। यही कारण है कि खरीददार खरीदने से पूर्व वस्त्र को छूते हैं जो या तो जिज्ञासावश, आनंद के लिए अथवा उसे खरीद लेने के उपरांत किसी भ्रम से बचने के लिए किया जाता है।

चित्र 1.21 दृश्यमान तंतु–विन्यास, कागज पर मल्टी–मीडिया

वास्तविक तंतु–विन्यास: वास्तविक तंतु–विन्यास को 'स्पर्शिक तंतु–विन्यास' भी कहा जाता है तथा इसका

आशय है छुए जाने पर सामग्री पर तंतु–विन्यास का महसूस होना। दूसरे शब्दों में, उंगलियों, हाथ और त्वचा में उसके तंतु–विन्यास का अहसास होता है, उदाहरण के लिए साटन की कोमलता, डेनिम की कठोरता अथवा ऊन की गुदगुदाहट। संग्रहालयों में वस्तुओं अथवा कपड़ों की कलाकृतियों को दर्शकों द्वारा जिज्ञासावश छूने से रोकने के लिए 'कृपया इन्हें न छुएं' संकेत लगाए जाते हैं।

तंतु–विन्यास वस्त्र की सतह पर एकरूपता अथवा विविधता का वर्णन करता है। ऐसा निम्नलिखित कारकों से होता हैः–

- ***वस्त्र का प्रकार*** : वस्त्र की लंबाई (लंबा अथवा छोटा) आनम्यता (मुलायम अथवा कठोर), व्यास (मोटाई अथवा महीनता का अवधारण) तंतु–विन्यास को प्रभावित करते हैं।
- ***सूत की संरचना:*** बुनाई का सूत मुलायम अथवा 'लिसलिसा' हो सकता है, (जैसे बोगल यार्न)।
- ***वस्त्र की संरचना*** : ऐसा बुनाई के कारण हो सकता है जैसे मुलायम (रेशम की सामान्य बुनाई) अथवा कठोर (ड्रिल/डेनिम की टुइल बुनाई)। यहां तक कि मुलायम बुनाई के सूत संरचना के अनुसार पतले अथवा मोटे हो सकते हैं।
- ***सतह परिष्करण:*** अनेक हस्त, रासायनिक अथवा यांत्रिक परिष्करणों के माध्यम से अनेक प्रकार के परिष्करण सृजित किए गए हैं। डेनिम को इंजाइम वाश, स्टोन वाश, अथवा एसिड वाश से उपचारित किया जा सकता है। डेनिम में इंजाइम–वाश, स्टोन–वास, एसिड–वाश देखी जा सकती हैं। कॉटन को मर्सेराइज्ड अथवा कैलेण्डर्ड किया जा सकता है।
- ***सतह डिजाइन*** : ये मैनुअल तकनीकें हो सकती हैं जैसे फैब्रिक पेंटिंग, फैब्रिक क्रिंक्लिंग, रनिंग स्टिच लाइंस अथवा व्यापारिक तकनीकें जैसे फ्लांकिंग (उदाहरणार्थ डीवोर फैब्रिक)

चित्र 1.22 स्प्रिंग समर 2008 में विल्स इंडिया फैशन वीक में वरुण सरदाना ने एक मूर्त ऑलओवर सर्फेस टैक्सचर प्रस्तुत किया

1.2.5 *रंग*

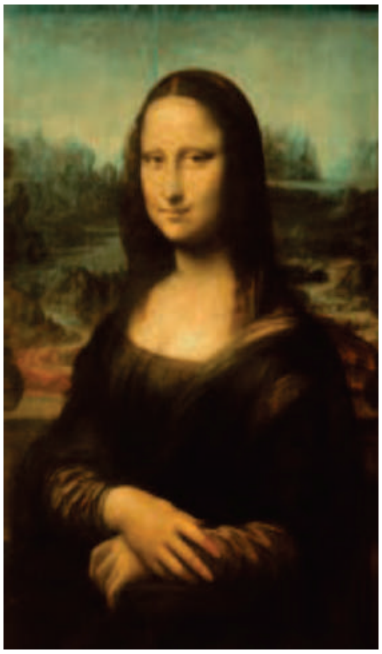

चित्र 1.23 लियोनार्दो दा विंसी कृत मोना लीसास चित्रकार द्वारा प्रयोग में लाई गई श्फूमोतो तकनीक हल्के से गाढ़े की ओर रंग सामंजस्य का एक गौण, मंद रूपांतरण सृजित करती है जिससे आंख रंग के प्रयोग में किसी भी सीमा का पता नहीं लगा पाती हैं।

अथवा एम्बोसिंग।

मानव की आंख इंफ्रारेड, पराबैंगनी और एक्स–रे को छोड़कर केवल सीमित प्रकाश तरंगों को ही देख सकती हैं। प्रकाश का दृश्यमान स्पेक्ट्रम लाल, संतरी, पीले, हरे, नीले और बैंगनी रंगों की परिधि में प्रत्यावर्तित होता है जिसे उस समय देखा जा सकता है जब प्रकाश

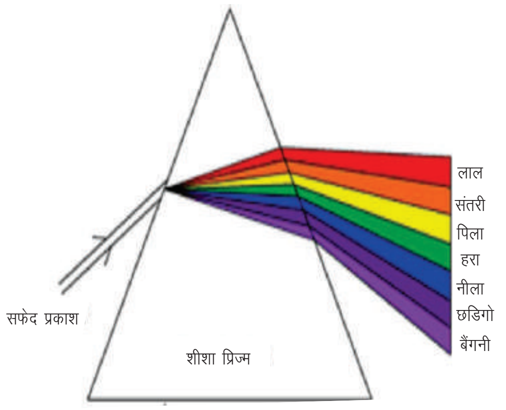

चित्र 1.24 एक प्रिज्म से प्रत्यावर्तित होते रंग

एक प्रिज्म से होकर गुजरता है।

रंग किसी परिधान की परिकल्पना और परिबोध का तथा उस परिवेश का जिसमें वह प्रस्तुत किया गया है एक अभिन्न भाग है। रंग ही वह पहला अवयव है जो ग्राहकों को वस्त्र/उत्पाद की ओर प्रारंभ में आकर्षित करता है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि प्रकाश रंग के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तथा किसी स्टोर के भीतर रंग को 'समुचित' रूप से 'दिखाया' जाना चाहिए। किसी ग्राहक द्वारा की गई खरीद परिधान के स्वरूप, रंग तथा परिवेश के संदर्भ में उसकी स्व–धारणा पर भी निर्भर करती है।

चूंकि प्रत्येक रंग के आगे भी अनेक रूप हैं, प्रत्येक का सही–सही वर्णन करना कठिन कार्य है। परिधान उद्योग में डिजाइन तथा विनिर्माण वृत्तिकों के संदर्भ के लिए रंग प्रणालियों के माध्यम से रंग का अंतराष्ट्रीय मानकीकरण किया गया है। सरल वैश्विक संदर्भ के लिए फैशन और वस्त्र उद्योग में पैंटोन कलर सिस्टम का व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है। वैयक्तिक परिधान परामर्शक और शैलीकारों जैसे वृत्तिक अपने ग्राहकों को ऐसे परिधानों के डिजाइन और रंगों के

चित्र 1.25 कलर फैन

संबंध में उपयुक्त चयन करने मेंसहायता प्रदान करते हैं जो उनकी त्वचा के रंग के अनुकूल होते हैं।

परिधान, गृह सज्जा और दीवारों के रंग के उद्योग में रंग का पूर्वानुमान रंग की भविष्यवाणी करने वाले संघ द्वारा किया जाता है जो आगामी मौसम/वर्ष के लिए रंगों की प्रवृत्तियों का पूर्वानुमान लगाते हैं, उदाहरण के लिए रंग विपणन समूह और कलर एसोसिएशन ऑफ यूनाइटेड

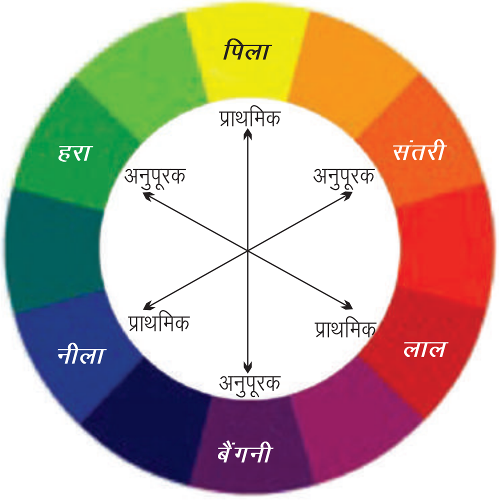

चित्र 1.26 रंग चक्र

प्राथमिक	***गौण***	***तृतीयक***
पीला	हरा	पीला–हरा नीला–हरा
नीला	बैंगनी	नीला–बैंगनी लाल–बैंगनी
लाल	संतरी	लाल–संतरी पीला–संतरी

प्राथमिक + प्राथमिक = गौण रंग

प्राथमिक + गौण = तृतीयक रंग
स्टेट्स (सीएयूएस)।

रंग चक्र पर रंगों को गर्म और शीतल रंगों के रूप में विभाजित किया गया है:

- ***गर्म रंग*** होते हैं, लाल–बैंगनी, लाल, लाल–संतरी, संतरी, संतरी–पीला से लेकर पीले तक।
- ***शीतल रंग*** होते हैं बैंगनी, नीला–बैंगनी, नीला, नीला–हरा, हरा से लेकर पीला–हरा तक।

रंग में औपचारिक अभिव्यक्त और सांकेतिक विशेषताएं होती हैं:

रंग की औपचारिक विशेषताएं होती हैं – वर्ण मूल्य और प्रबलता

I *वर्ण* – वर्ण का अर्थ है रंग चक्र पर रंग का नाम तथा यह शुद्ध रंजक रंगों पर आधारित है, जैसे लाल, नीला, पीला, हरा, बैंगनी, नीला–हरा आदि। एपल, रैड, लेमन, एक्वा जैसे रंग उन रंगों के नाम हैं लेकिन वर्ग नहीं हैं क्योंकि वे रंग का सटीक विनिर्देशन नहीं हैं।

ii. *मूल्य* – मूल्य श्वेत और श्याम के संदर्भ में किसी रंग के हल्केपन अथवा भारीपन से संबंधित है। किसी रंग का मूल्य इसमें निरंतर उस समय तक श्वेत रंग मिलाकर बढ़ाया जा सकता है जब तक कि यह श्वेत रंग से अविभेदकारी न हो जाए। इसी प्रकार किसी रंग के मूल्य में निरंतर उस समय तक काला रंग मिलाकर कमी की जा सकती है जब तब तक कि वह काले रंग से अविभेदकारी न हो जाए।

iii. *प्रबलता* – रंग की प्रबलता उसकी चमक अथवा उसकी संतृप्ति है। इसे दो प्रकार से कम किया जा सकता है:

- वर्ण में रंग चक्र मे ंउसके संपूरक वर्ग को मिश्रित करके जैसे नीला और संतरी।
- वर्ण में ग्रे रंग मिलाकर
- वर्ण में काले अथवा सफेद के तटस्थ वर्ण मिलाकर।

'श्वेत' के साथ मिश्रित वर्ण के परिमाण में वृद्धि होती है तथा उसे उस रंग का 'टिंट' कहा जाता है। '
ग्रे' के साथ मिश्रित वर्ण के परिमाण में कमी होती है तथा उसे उस रंग का 'टोन' कहा जाता है।
काले के साथ मिश्रित वर्ण के परिमाण में कमी होती है तथा उसे उस रंग का 'शेड' कहा जाता है। उदाहरण के लिए कोबाल्ट ब्लू में सफेद रंग के निरंतर मिश्रण के परिणामस्वरूप ब्लू का टिंट प्राप्त होता है, जो इसके

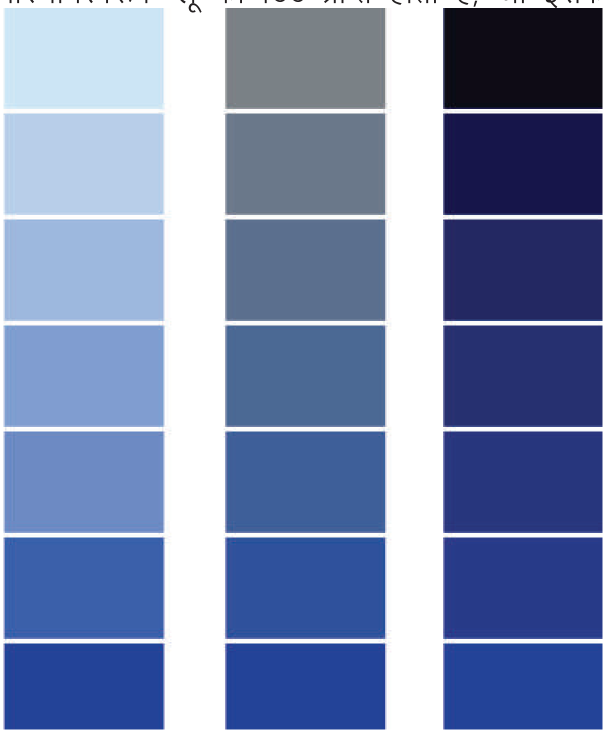

चित्र 1.27 बांए से दाएं नीले वर्ण के टिंट, टोन और शेड

परिमाण में वृद्धि और इसकी प्रबलता में कमी करता है।

लेकिन, यह स्मरण रहना चाहिए कि विविध अनुपातों में विशुद्ध वर्णों के मिश्रण से उस रंग के अनेक टोनों का सृजन हो सकता है, उदाहरण के लिए विभिन्न अनुपातों में नीले और पीले रंग का मिश्रण हरे रंग के विभिन्न टोन उत्पन्न कर सकता है जो हरित–नीले से हरित–पीले तक हो सकते हैं।

रंग चक्र के आधार पर अन्य अनिवार्य रंग स्कीमें हैं:–

1. एक्रोमेटिक रंग स्कीम में कोई रंग नहीं होता

चित्र 1.28 एक्रोमेटिक रंग स्कीम

चित्र 1.29 अभिषेक गुप्ता तथा नंदिता बासु द्वारा विल्स इंडिया फैशल वीक 2008 में निर्मित पोंछो में एक्रोमेटिक रंग स्कीम का प्रयोग किया जाता है।

है, इसमें एक संवर्धनात्मक मात्रा में ग्रे के टिंट और शेड शामिल होते हैं तथा इस मात्रा के एक सिरे पर सफेद होता है तथा दूसरे सिरे पर काला।

चित्र 1.30 मोनोक्रोमेटिक रंग स्कीम

2. मोनोक्रोमेटिक रंगों में समान वर्ण के टिंट और शेड शामिल होते हैं।

चित्र 1.31 विल्स इंडिया फैशन वीक शो स्प्रिंग समर 2012 में संपूरक रंगों के टिंटों का प्रयोग करते हुए

3. संपूरक रंग वे होते हैं जो रंग चक्र पर एक–दूसरे के प्रत्यक्षतः विपरीत होते हैं जैसे लाल–हरा, नीला–संतरी और पीला–बैंगनी।

4. सदृश्य रंग विभिन्न ऐसे रंगों का एक समूह है जो रंग चक्र में एक–दूसरे के आगे–पीछे होते हैं, उदाहरण के

चित्र 1.32 विल्स इंडिया फैशन वीक 2010 में सदृश्य रंग योजना में राजेश प्रताप सिंह की पोशाक

5. **त्रय रंग** का आशय है तीन ऐसे रंग जो रंग चक्र पर एक–दूसरे से समान दूरी पर रखे गए हैं अर्थात् लाल–नीला–पीला अथवा बैंगनी–संतरी–हरा।
6. **वस्त्रों में तटस्थ रंग** जैसे भूरे रंग के टिंट, टोन और शेड (अर्थात् बीज, टैन, सैंड, कैमल, ब्राउन आदि) तथा ग्रे (अर्थात् एश ग्रे, स्टोर्म ग्रे, स्टोन ग्रे आदि) स्वयं की ओर ध्यान आकर्षित नहीं करते हैं तथा प्रत्येक फैशन मौसम में अत्यधिक लोकप्रिय हैं।

रंग की अभिव्यक्ति विशेषताओं में शरीर विज्ञानी और मनोविज्ञानी पहलू शामिल हैं:

1. रंग के प्रति **शरीर-विज्ञानी प्रतिक्रिया** रक्तचाप, हृदय की गति और यहां तक कि मस्तिष्क के क्रियाकलाप को प्रभावित करती है। यह बात साज–सज्जा के लिए उतनी ही लागू है जितनी कि फैशन उत्पादों/परिधानों के लिए जिसका कारण वह परिमाण है जिससे हमारा मस्तिष्क गर्म और ठंडे रंगों के परिमाण, वर्ण और प्रबलता को परिकल्पित करता है। ठंडे रंग जैसे नीला और हरा रक्तचाप को कम करते हैं तथा एक शांत प्रभाव उत्पन्न करते हैं जबकि गर्म रंग हृदय की गति और श्वसन क्रिया में वृद्धि करते हैं।
2. रंग के प्रति **मनोविज्ञानी प्रतिक्रिया** प्रसन्नता, उत्तेजना, शांति आदि की संवेदनाओं को प्रभावित करती है। विशुद्ध वर्णों तथा उनके टिंट/शेड के सामंजस्य में विभेद होते हैं अर्थात् लाल (विशुद्ध वर्ण) हृदय और रक्त को उत्प्रेरित करने वाली संवेदनाओं के साथ सहयोजित होता है जिसमें मनोवेग तथा उत्तेजना/क्रोध/पीड़ा/खतरे की विविधतापूर्ण भावनाएं सम्मिलित होती हैं। गुलाबी (लाल का टिंट) नारीत्व और प्रेम से सहयोजित होता है। कैर माइन प्रायः (लाला का शेड) कुलीनता से सहयोजित होता है।

सांकेतिक विशेषताएं

रंग संकेतवाद संस्कृति और सामाजिक परंपरा से विकसित होता है। प्रायः बालिका शिशु को गुलाबी रंग पहनाया जाता है जबकि युवा बालकों को नीले रंग के कपड़े पहनाए जाते हैं। पश्चिमी वधुएं श्वेत रंग पहनती हैं जबकि अधिकांश भारतीय वधुएं लाल रंग पहनती हैं। पश्चिम परंपरा यह है कि शोक सभा में काले कपड़े पहने जाते हैं जबकि भारत में शोक के अवसरों पर सफेद वस्त्र धारण किए जाते हैं। मानसिक संबंधों को सृजित करने के लिए विनिर्माताओं द्वारा रंग संकेतवाद का प्रयोग किया जाता है, उदाहरण के लिए त्वचा श्रृंगार फाउंडेशन 'वार्म पीच' के नाम से है, जो फल के रंग के साथ सहयोजित है तथा उपभोक्ता की त्वचा के रंग के साथ भी सहयोजित है।

कपड़ों के साथ संबंधित रंग मनोवैज्ञानिकता के कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं:

- **नीला** रंग शांति का प्रतीक है तथा यह आराम की भावना भी अभिव्यक्त करता है। प्रायः तरण तालों में नीले रंग की टाइलें लगाई जाती हैं। नेवी ब्लू रंग प्रधानता के साथ वर्दियों (उदाहरण के लिए विद्यालय, नौसेना) कार्यालय परिधानों और औपचारिक पोशाकों में दिखाई पड़ता है। नीले रंग की

- डेनिम जीन्स जो हल्के नीले से लेकर गाढ़े नीले के अनेक शेडों में होती है, सदैव मांग में रहती हैं।
- **हरा** रंग शांति प्रदान करने वाला है तथा प्रकृति से संबधित है। अस्पताल की आंतरिक साज–सज्जा और स्वास्थ्य केन्द्र/स्पा प्रायः हरे रंग में होते हैं। हरे रंग के विविध परिमाण जैसे पत्तियों के हरे रंग से लेकर पुदीने के हरे रंग और गहरे हरे रंग तक प्रकृति में रुचि दर्शाते हैं। सेना तथा अन्य सुरक्षा बलों की वर्दियों में मॉस ग्रीन, ओलिव और खाकी के छलावरण प्रिंट दिखाई पड़ते हैं।
- **बैंगनी** रंग संपत्ति और राजसी शान से संबंधित है। यह विशेष रूप से औपचारिक, त्योहारों अथवा वैभवपूर्ण अवसरों के लिए लोकप्रिय है।
- **पीला** रंग चमकदार और प्रसन्नचित्त करने वाला रंग है जो मनोबल को बढ़ाता है। इसकी उच्च दृश्यमानता के कारण इसे प्रायः वर्षा की पोशाकों में अथवा सड़क मरम्मत या यातायात नियंत्रण के कार्यों में लगे कर्मियों द्वारा पहना जाता है। फैशन में पीले रंग की लोकप्रियता इस तथ्य द्वारा प्रभावित होती है कि यह समस्त त्वचा वर्णों के अनुकूल नहीं होता है। पीले रंग की प्रधानता और लोकप्रियता इसके परिमाण पर भी निर्भर करती है, उदाहरण के लिए लेमन येलो, रंग कैनरी येलो की तुलना में पुरुषों और महिलाओं के मध्य अधिक स्वीकार्य है। भारत में मैंगों येलो एक लोकप्रिय त्योहार रंग है।
- **नारंगी** रंग प्रायः जवानी और ऊर्जा से सहयोजित है। पीच (नारंगी का टिंट) से लेकर टैंजेरीन (लाल के साथ मिश्रित नारंगी) तक नारंगी रंग का प्रयोग रोजमर्रा पहने जाने वाले परिधानों में किया जाता है।

भाषा में रंगों का संकेतवाद

कभी–कभी हम संवेदनाओं का वर्णन करने के लिए रंग संदर्भों का प्रयोग करते हैं। इसके कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैंः–

केवल वही सिंहासन पर बैठ सकता है जिसका रक्त **नीला** (शाही) है।

जब उसे उत्तेजित किया गया तो वह गुस्से में **लाल** हो गई।

वह ईर्ष्या में **हरी** हो गई थी।

वह इतना **पीला** (कमजोर) था कि चुनौती के समक्ष खड़ा नहीं हो सका।

उसने उससे **सफेद** झूठ बोला।

अभ्यास १.१

रिक्त स्थान भरिए:

1. 'डिजाइन' शब्द के मूल का अर्थ है ______________________
2. ______________________ वह तकनीक है जहां बिंदुओं की श्रृंखला सामूहिक रूप से वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करती है।
3. 19वीं शताब्दी की पेंटिंग तकनीक जिनमें रंगों को मिश्रित करने के स्थान पर रंगों के चित्र बनाए जाते थे ______________________ कहलाती है।
4. सीधी रेखाएं रेखीय कहलाती है तथा वक्रीय/लहरदार रेखाएं ______________________ कहलाती है।
5. ऐसी रेखाएं जो एक वस्तु की रूपरेखा के रूप में वास्तव में विद्यमान नहीं होती है ______________________ कहलाती है।
6. ______________________ ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग वस्त्रों की रूपरेखा का वर्णन करने के लिए किया जाता है।
7. दृश्यमान व्यवस्था के बिना प्रस्तुत किए प्रिंटों को ______________________ कहा जाता है।
8. वस्त्र पर तंतु–विन्यास के प्रकार हैं – वास्तविक और ______________________ ।
9. वास्तुविक तंतु–विन्यास को ______________________ तंतु–विन्यास भी कहा जाता है।
10. ______________________ रंग चक्र पर एक रंग के नाम को निर्दिष्ट करता है तथा यह विशुद्ध रंजक रंगों पर आधारित है।
11. सफेद रंग में मिश्रित किए जाने पर किसी रंग का परिमाण ______________________ होता है।
12. ______________________ रंग स्कीम में समान वर्ण के टिंट और शेड शामिल होते हैं।

रंग सहयोजन के संदर्भ में निम्नलिखित का मिलान करें:

लाल	ऊर्जा
पीला	आशावाद
संतरी	मनोयोग
नीला	सर्वतोमुखी
हरा	श्राजसी
बैंगनी	टाराम

क्रियाकलाप

पंक्ति में अभिव्यक्त की विशेषताएं होती हैं। कल्पना करें कि निम्नलिखित संवेदनाओं को रेखाओं के माध्यम से किस प्रकार अभिव्यक्त किया जा सकता है:

- प्रसन्नता
- उदासी
- अभिलाषा
- अस्त–व्यस्तता

1.3 डिजाइन के सिद्धांत

कोई भी वस्त्र डिजाइन संरचना से बना होता है जिसे इकाइयां (यूनिट्स) कहा जाता है। एक इकाई एक डिजाइन का सृजन करने के लिए पर्याप्त हो सकती है जबकि अन्य डिजाइनों में अनेक इकाइयों का प्रयोग किया जा सकता है। परिधानों में, इकाइयां कॉलर, जेबें, बेल्ट आदि हो सकती हैं। परिधान का डिजाइन तब सफल होता है जब यह ग्राहकों के सौंदर्यबोध को प्रभावित करता है तथा इसके फलस्वरूप व्यवसाय वृद्धि होती है। अभिनवता के लिए निरंतर तलाश में, डिजाइनर वस्त्र की विधि इकाइयों के नए विन्यासों और संयोजनों को प्रस्तुत करते हैं जो देखने में मनमोहक लगते हैं। इनकी आयोजना एक–दूसरे के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए की जाती है तथा ये साधारणतया और संश्लिष्टता के बीच एक संतुलन प्रदान करते हैं। यदि यह अत्यंत साधारण या अत्यंत संश्लिष्ट होता है, तो ग्राहकों द्वारा इसे अस्वीकार किए जाने की संभावना होती है। परिधान डिजाइन में, डिजाइन के सिद्धांत हैं – समानता, अनुपात, पुनरावृत्ति, संतुलन, लय, समीपता और बल।

1.3.1 समानता

समानता का आशय है एक साथ समूह बनाए गए विभिन्न इकाइयों के पुंज क्योंकि उनकी दृश्यमान संबद्धता होती है। उनकी यही पुंजता हमें यह परिकल्पित करने पर विवश करती है कि ये विकीर्णित इकाइयों के स्थान पर एक समूह है। रंग, आकृति, आकार अथवा तंतु–विन्यास जैसी विशेषताएं इकाइयों के बीच संबंधों को स्थापित करती हैं जिससे वे समूह में बंधती हैं। असमान विशेषताएं उनका वियोजन करती प्रतीत होती हैं। दूसरे शब्दों में, विपरीतता विकर्णित करती है तथा समानता आकर्षित करती है।

किसी फैशन शो में, डिजाइनर सामूहिक प्रभाव का सृजन करते है जिसे यह प्रतीत होता है कि वे आगामी मौसम के लिए एकीकृत प्रवृत्ति के रूप में रंग पैलेट, सिलुएट, फैब्रिक अथवा तंतु–विन्यास के संदर्भ में एक साथ एक समूह से 'संबंध' रखते हैं।

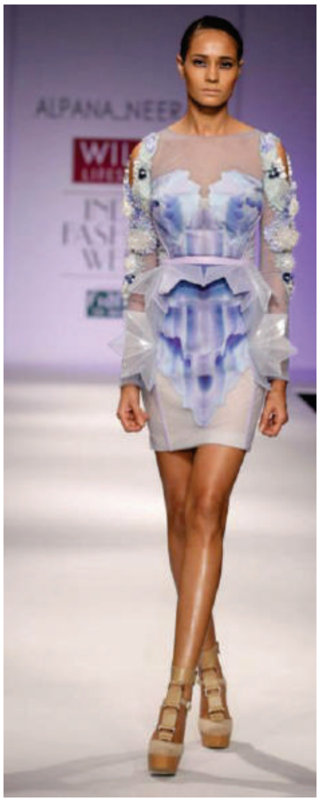

चित्र 1.33 स्प्रिंग समर 2013 के लिए अल्पना नीरज

1.3.2 अनुपात

इसका आशय है कि प्रिंटों का सापेक्ष परिमाण और आकार अथवा किसी समूह की संरचनाएं जिसमें वस्त्रों की विभिन्न मदें सम्मिलित हैं। इन पृथक अवयवों को उस समय आनुपातिक माना जाता है जब वे आकार में समान हों। किसी वस्त्र की लंबाई और चौड़ाई में अत्यधिक अंतर के परिणामस्वरूप उसकी बनावट गैर–अनुपातिक प्रतीत होती है। समान अथवा संतुलित अनुपात आंखों को भाते हैं।

श्रेण्य कलाकारों द्वारा स्थापित किए गए 'स्वर्णिम अनुपात' का आशय वह आदर्श अनुपात है जो देखने में अत्यधिक आनंददायक होता है। वस्त्रों के संदर्भ में, इसका एक उदाहरण यह है कि इस प्रकार से रखी गई एक रेखा (सीवन) जो दो भागों में विभाजित हो गई है, एक भाग में पांच में से दो खण्ड हैं तथा दूसरे भाग में पांच में से तीन खण्ड हैं। इस प्रकार, गलत अनुपात से शरीर अपेक्षाकृत छोटा अथवा चौड़ा प्रतीत हो सकता है।

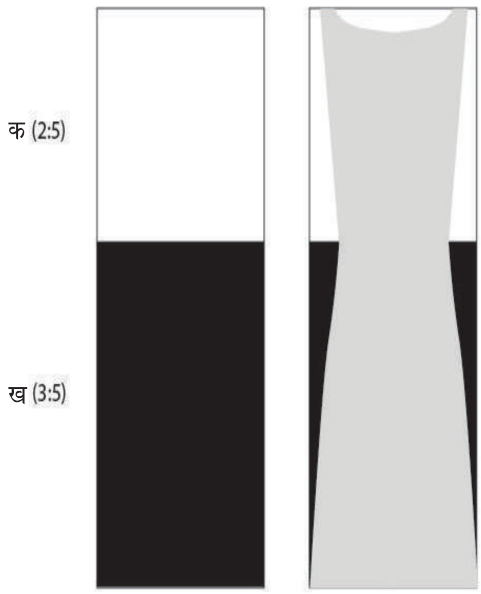

चित्र 1.34 'स्वर्णिम अनुपात' आनुपातिक संबंध का उदाहरण

परिधान डिजाइन में, अनुपात दो पहलुओं के संदर्भ में हो सकता है:

(i) इकाई का आकारः इकाई के आकार (अर्थात् कॉलर, जेब, बेल्ट, बटन आदि) पर वस्त्र के कुल 'स्थान' के अनुसार विचार किया जाना चाहिए (अर्थात् सिलुएट और आकृति) उदाहरण के लिए एक भारी–भरकम ओवरकोट के लिए आनुपातिक रूप से बड़े कॉलर अथवा जेबों की आवश्यकता होती है। बच्चों की पोशाकों में छोटे पीटर पैन कॉलर होते हैं।

(ii) प्रिंट का आकारः इसी प्रकार प्रिंट भी वस्त्र के आकार के अनुपात में होने चाहिए। प्लस–आकार के वस्त्रों पर, बड़े प्रिंट शरीर की आकृति और आकार में भी वृद्धि कर देंगे। बच्चों पर छोटे प्रिंट अधिक आनुपातिक प्रतीत होते हैं।

1.3.3 पुनरावृत्ति

इसका आशय है एक इकाई/मोटिफ का एक–दूसरे के समीप अनेक बार रखा जाना। वस्त्रों पर, समस्त सतह को भरने के लिए एक योजनाबद्ध, आवृत्तिपूर्ण तरीके से एक अथवा अधिक अवयवों के साथ किसी इकाई को रखा जाना 'पुनरावृत्ति' कहलाती है। इकाइयों की आवृत्तिपूर्ण व्यवस्था दिशात्मक (साधारण) अथवा बहु–दिशात्मक (जटिल) हो सकती है। एक समग्र पैटर्न में, आकार अथवा रंग में समान इकाइयां कपड़े की समस्त सतह पर वितरित की जाती हैं। प्रिंट की पुनरावृत्ति कपड़े पर समग्रता से हो सकती है अथवा ऊर्ध्व/क्षैतिज/विकर्णी पंक्तियों में! इनकी सर्वतोमुखी प्रवृत्ति तथा कपड़े को काटते समय आर्थिक रूप से इष्टतमीकरण के फलस्वरूप इन्हें प्रायः वस्त्रों पर पाया जाता है।

चित्र 1.35 समग्र हैंड प्रिंटेड फैब्रिक

1.3.4 संतुलन

संतुलन का आशय वह तरीका है, जिससे 'भार' को वितरित किया जाता है ताकि शरीर स्थिर प्रतीत हो। शरीर के अग्रभाग के केन्द्र पर ऊर्ध्व अक्ष तथा क्षैतिज अक्ष को सीने, कमर और कूल्हों पर सर्वाधिक स्पष्टता के साथ परिकल्पित किया जाता है तथा साथ ही यह इकाइयों के 'भार' (अर्थात् संरचना/पैनलों) को संतुलित भी करता है। किसी वस्त्र के लिए बायीं अथवा दायीं ओर सम्मति में होना आवश्यक नहीं है। यदि एक तरफ भारी दृश्यमान संरचना डाली गई है तो दूसरी तरफ कतिपय छोटी इकाइयों का समावेश करके इसे संतुलित किया जा सकता है। सममितीय, असममितीय, त्रिज्यीय संतुलन तथा समग्र पैटर्न द्वारा संतुलन प्राप्त किया जा सकता है।

i. सममितीय संतुलन

जब इकाइयों को अक्ष रेखा के दोनों ओर समान रूप से रखा जाता है तो वे सममितीय संतुलित होती हैं अर्थात् दोनों पक्ष एक–दूसरे के समरूप होते हैं। अधिकांश आधारभूत तथा श्रेव्य शैलियों के परिधान जैसे जीन्स, कमीजें, जैकेट सममितीय होते हैं अर्थात् बाईं और दायीं ओर से समान होते हैं।

ii. असममितीय संतुलन

जब इकाइयों में, भले ही वे असमान हों, समान दृश्य भार होता है, तो संतुलन को असममित कहा जाता है। ऐसा दो प्रकार से प्राप्त किया जा सकता है:

(क) **अवयवों के साथ संतुलन जैसे आकृति, रंग अथवा तंतु-विन्यास** : एक विशाल साधारण आकृति को छोटी संश्लिष्ट आकृतियों के पुंज द्वारा संतुलित किया जा सकता है। इसी प्रकार, गहरे अथवा तटस्थ रंग के विस्तार को चमकीले रंगों के पुंज द्वारा संतुलित किया जा सकता है।

(ख) **वस्त्र को काटने के माध्यम से संतुलन** : ऑफ–सेंटर ओपनिंग के साथ रैप स्कर्ट्स/सैरोंग्स, ऑफ वन–शोल्डर टॉप्स अथवा असममितीय संरचनाओं के साथ ईवनिंग गाउंस तकनीकी रूप से अत्यंत जटिल होते हैं तथा असममिति को और आंखों को आकर्षित करते हुए अधिक दृश्यमान ध्यान की ओर संकेत करते हैं।

iii. अक्षीय संतुलन

इसका आशय वृत्तों की उस व्यवस्था से है जो एक केन्द्रीय धुरी से बाहर की ओर विकीर्णित हो रहे हैं। इनमें इकाई का भार एक चक्रीय रूप में समान रूप से वितरित होता है। इसी प्रकार, केन्द्र पर एक बिंदु बढ़ते हुए आकार के संकेन्द्रित वृत्तों को विकीर्णित कर सकता है। इसमें साधारण सममितीय संतुलन की तुलना में अधिक जटिलता हो सकती है

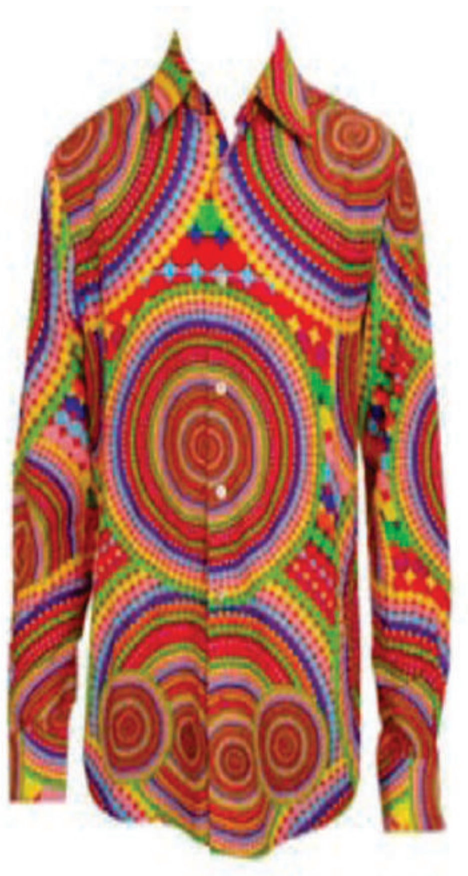

चित्र 1.36 अक्षीय प्रिंट के साथ मनीष अरोड़ा की कमीज

iv. समग्र पैटर्न

किसी कपड़े पर समग्र प्रिंट अथवा सजावट को रखा जाना सतह को समान से संतुलित बनाता है।

चित्र 1.37 आशिमा लीना 2008 द्वारा समग्र प्रिंट के साथ पोशाक

1.3.5 लय

मानव और प्रकृति में लय विद्यमान है – श्वसन की प्रक्रिया में, लहरों के उठने और गिरने में, चांद के बढ़ने और घटने में। वस्त्रों अथवा बास्केटों को बुनने (निट अथवा पर्ल) तथा सिलाई की तकनीकों में लय पाई जाती है।

आंखों का संचलन उस समय सुचारू होता है जब यह किसी विशिष्ट प्रकार अथवा पैटर्न में पुनरावृत्तिकारी इकाइयों को 'देखती' हैं। परिधान में, सतह पर रेखाओं, रंगों, आकृतियों और तंतु–विन्यासों की पुनरावृत्ति की नियमितता लय कहलाती है। उदाहरण के लिए, तहों अथवा चुनटों (रेखाओं), बटनों (बिंदुओं), वृत्तों, वर्गों अथवा आयताकारों (आकृतियों) आदि का निरंतर प्रयोग दृश्य लय सृजित करता है। इकाइयों की संख्या जितनी अधिक होती है, जटिलता इतनी अधिक बढ़ती जाती है, जो उस पैटर्न को अत्यधिक अव्यवस्थित बनाए बिना देखने वालों का ध्यान आकर्षित करने के संबंध में डिजाइनर की चुनौती में वृद्धि कर देती हैं

लय की गति का अर्थ है इकाइयों की संख्या और उनके बीच स्थान। उदाहरण के लिए पतली धारियां जिनके बीच कम स्थान हो, 'उच्च गति' का आशय प्रदान करती है अर्थात् अधिक स्थान वाली मोटी धारियों की तुलना में तेज गति जिनकी दृश्यमान रूप से 'मंद गति' होती है।पैटर्न का आशय है इकाइयों की श्रृंखला जो दो प्रकार की हो सकती है – वैकल्पिक और प्रगामी।

- वैकल्पिक इकाइयों में आवृत्ति की समान इकाइयां होती हैं अर्थात् उनकी नियमित, पूर्वानुमान योग्य श्रृंखलाएं भिन्न–भिन्न होती हैं। रेखाएं अथवा पंक्तियां रंग अथवा प्रिंट के संदर्भ में वैकल्पिक रूप से विविधतापूर्ण हो सकती हैं। इसका अर्थ यह है कि कोई इकाई (अर्थात् वस्त्र) तब तक पुनः प्रयोग में लाई जाएगी जब तक कि पूरी सतह भर न जाए।
- प्रगामी इकाइयां भी पुनरावृत्ति के बारे में है परंतु इकाइयों के आकार में परिवर्तन होता है। रंगों अथवा तंतु–विन्यासों के लिए धीरे–धीरे परिवर्तित होना संभव होता है जिससे लयात्मक पैटर्न सृजित होते हैं। उदाहरण के लिए, रंग में धीमा परिवर्तन गहनतापूर्ण रंगों के साथ संवर्धित/वर्धित हो सकता है। धारियों के मामे में, उनके बीच अंतर निरंतर बढ़ अथवा घट सकते हैं। सामान्यतः प्रगामी लय वैकल्पिक लयों की तुलना में अधिक जटिल होती हैं।

चित्र 1.38 दृष्ट सर्वेया 2008 द्वारा ओम्बर ड्राइड पोशाक

1.3.6 समीपता

इसका आशय है इकाइयों की समीपता तथा एक विशिष्ट 'स्थान' (गार्मेंट, रैम्प) के भीतर उनकी समानता के संदर्भ में उन्हें वर्गीकृत करना। जब विभिन्न इकाइयां एक–दूसरे के समीप होती हैं, तो मनुष्य की आंखें उन्हें वर्गीकृत करना आरंभ कर देती हैं जिसके फलस्वरूप दृश्यमान एकीकरण और व्यवस्था का सृजन होता है। यह विशेष रूप से फूलों वाले डिजाइन में दिखाई पड़ता है। चूंकि अत्यधिक समानता नीरसता उत्पन्न करती है, पैटर्न में रुचि बढ़ाने के लिए असमान आकृतियों अथवा तंतु–विन्यासों का प्रयोग किया जाता है।

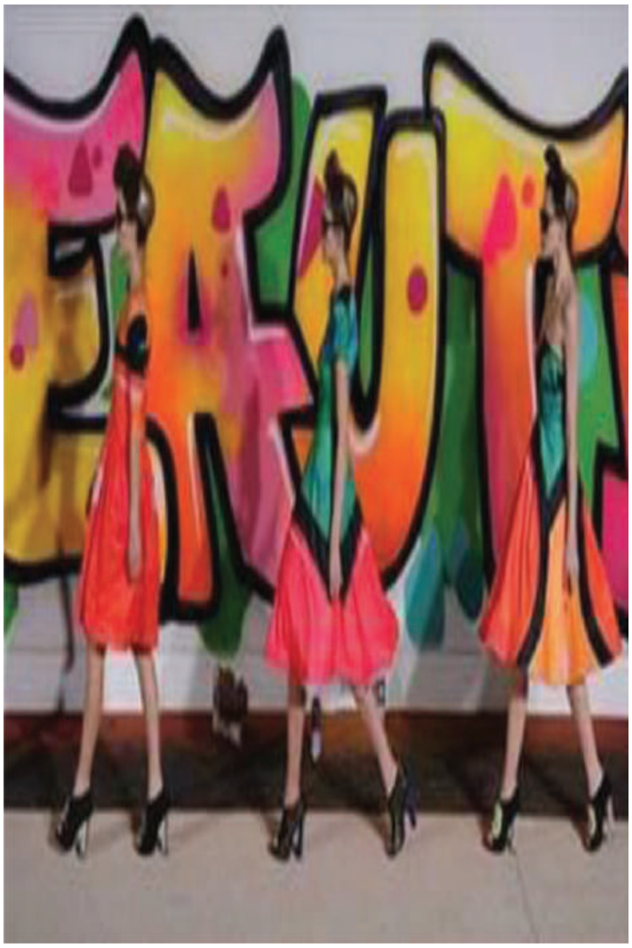

चित्र 1.39 मनीष अरोड़ा स्प्रिंग समर 2012 शो। दृश्यों में मध्य तथा साथ ही डिजाइन और ग्रैफिटी–पृष्ठभूमि के बीच चाक्षुक अनवरतता के संदर्भ में सामीप्यता।

1.3.7 बल

प्रदान किया गया बल किसी डिजाइन के केन्द्र की ओर ध्यान आकर्षित करता है। बिना किसी 'महत्वपूर्ण' संरचना के कोई भी डिजाइन कमजोर बन जाता है। एक अच्छा डिजाइन वह है जहां उसे देखने वाले का ध्यान उसके केन्द्रीय बिंदु की ओर आकृष्ट किया जाता है जबकि अन्य सभी संरचनाएं गौण हो जाती हैं चूंकि दो अथवा समान रूप से अधिक महत्वपूर्ण रुचि के बिंदु, एक–दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। रंग, आकृति, सतह अथवा तंतु–विन्यास के प्रयोग के माध्यम से बल की प्राप्ति की जाती है। यह एक एकल अवयव अथवा एक पुंज हो सकता है जहां एक अवयव प्रधान रूप से चाक्षुक रुचि के केन्द्र बिंदु का सृजन करता है। किसी पोशाक में किसी इकाई पर बल लघुता (अर्थात् लोगो) अथवा अतिश्योक्ति (अर्थात् एक विशाल 3–डी फूल का मोटिफ) के माध्यम से प्रदान किया जा सकता है।

चित्र 1.40 अरुण कुमार द्वारा अर्थन कैन्वस से पाइपिंग डिटेल के साथ बनाई गई कमीज में लघु बल प्रदान किया गया है।

सामंजस्य के माध्यम से बल

सामंजस्य रंग, आकार, आकृति, प्रिंट आदि के संदर्भ में हो सकता है। किसी गहरे रंग का सामंजस्य हल्के रंग के साथ स्थापित किया जा सकता है। एक बड़ी आधारभूत आकृति को छोटी, संश्लिष्ट आकृतियों द्वारा संतुलित किया जा सकता है।

वियोजन के माध्यम से बल

वियोजन समीपता का विलोम है। यह तब सृजित किया जाता है जब किसी संरचना को आकर्षक का केन्द्र बनाते हुए अन्य इकाइयों से कुछ दूरी पर रखा जाता है। किसी टी–शर्ट अथवा बैग पर बिना किसी अन्य संरचना के कोई छोटा लोगो अथवा मोटिफ अपनी वियोजित स्थिति के माध्यम से स्वयं का ध्यान आकर्षित कर सकता है।

स्थापन के माध्यम से बल

किसी इकाई का स्थापन इसकी विशेषताओं पर बल प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई बो–टाई को गले में लगाई गई है, तो यह शरीर के ऊपरी भाग अर्थात् चेहरे, गले और ऊपरी धड़ की ओर ध्यान, आकर्षित करेगी। कोई बेल्ट शरीर के मध्य में कमर की क्षैतिज रेखा पर बल प्रदान करेगी।

चित्र 1.42 स्थापन के माध्यम से बल

डिजाइन संबंधी सौंदर्यबोध और कौशलों के विकास के लिए प्रशिक्षण और समय की आवश्यकता होती है। कोई सुपरिकल्पित विषय एक संतुलित तरीके से वस्त्र, पैटर्नों, सतह डिजाइनों, ट्रिमिंग आदि के माध्यम से वर्णित किया जाता है। आरंभ में, डिजाइन के विद्यार्थियों को उनकी सृजनात्मकता और साथ ही डिजाइनों के वस्तुपरक विश्लेषण पर मार्गदर्शन और फीडबैक की आवश्यकता होती है जहां सभी अवयव और सिद्धांत एक–दूसरे के साथ सौहार्द में कार्य करते हैं।

अभ्यास 1.2

रिक्त स्थान भरिए:

1. 'डिजाइन' के सिद्धांत हैं समानता, अनुपात, पुनरावृत्ति, संतुलन, ____________ समीपता और बल।
2. समवता का आशय है अपनी चाक्षुक ____________ के कारण एक साथ वर्गीकृत इकाइयों के पुंज जबकि असमान विशेषताएं ____________ सृजित करती हैं।
3. श्रेण्य कलाकारों द्वारा प्रतिपादित ____________ का आशय है आदर्श अनुपात जो चाक्षुक दृष्टि से सर्वाधिक आनंददायक होता है।
4. परिधान डिजाइन में, अनुपात दो पहलुओं के संदर्भ में हो सकता है – इकाई का आकार और ____________ का आकार।
5. अत्यंत सामीप्य में एकल इकाई/मोटिफ का बार–बार स्थापन ____________ कहलाता है।
6. ____________ का आशय है वह तरीका जिससे शरीर को स्थिर दिखाने के लिए 'भार' का वितरण किया जाता है।
7. सममितीय, असममितीय और अक्षीय ____________ के प्रकार हैं।
8. ____________ का आशय है रेखाओं की पुनरावृत्ति, इकाइयों के रंगों, आकृतियों और तंतु–विन्यासों की श्रृंखला और नियमितता।
9. वस्त्र पर इकाइयों की समीपता और समानता के संदर्भ में उनका वर्गीकरण ____________ कहलाता है।

सामंजस्य, वियोजन और स्थापन ____________ को दर्शाने के तरीके हैं।

1.4 फैशन आकृति पर परिधान प्रदर्शन

महिलाओं, पुरुषों तथा बच्चों के शरीर का रेखाचित्र बनाने की योग्यता को किसी फैशन डिजाइनर के पेशे की आधारभूत आवश्यकता माना जाता है। लेकिन, प्रायः डिजाइन की योग्यता को रेखाचित्र बनाने की योग्यता का पर्याय ही समझा जाता है। सामान्यतः फैशन डिजाइन के छात्र अपने डिजाइनों का प्रदर्शन करने के लिए आकृतियां बनाते हैं। इस संदर्भ में, फैशन आकृति की भूमिका को तथा इस तथ्य को समझना महत्वपूर्ण है कि इसका प्रयोग डिजाइनों और फैशन चित्रकारों द्वारा क्यों किया जाता है।

प्रत्येक डिजाइन का एक मनोयोग होता है जिसे उसकी विशिष्ट विशेषताओं में वृद्धि करने के लिए एक निश्चित रूप में ढाले जाने की आवश्यकता होती है। अधिकांश मामलों में, डिजाइनर डिजाइन की संकल्पना करने और उसका चित्रण करने के लिए विशिष्ट मुद्राओं का प्रयोग करता है। सामान्यतः एक रैम्प मॉडल औसतन अधिक लंबी होती है तथा उसका शरीर छरहरा और लहरदार होता है। उसकी लंबाई डिजाइन को यथासंभव पूर्ण तरीके से प्रदर्शित करने में सहायता प्रदान करती है चाहे वह चलते समय हो या फिर चित्रण के प्रयोजनों के लिए। वस्त्रों को प्रदर्शित करने के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले पुतले का भी वही अनुपात होता है, जो एक आदर्श शरीर का होता है।

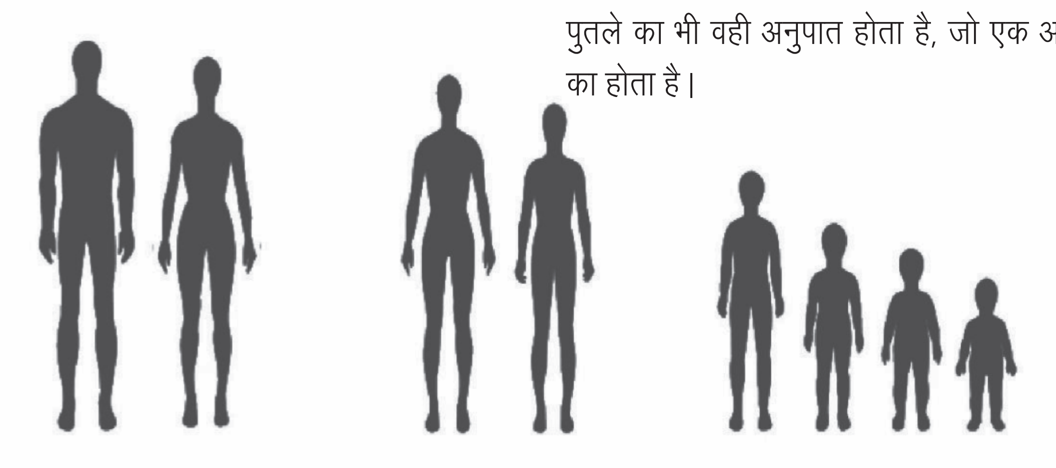

चित्र 1.43 शरीर के प्रकारों के सिलुएट (पुरुष, महिलाएं और बच्चे)

आदर्श शरीर की अवधारणा समय–समय पर बदलती रहती है, कभी–कभी यह अधिक वक्रीय होती है तथा अन्य अवसरों पर यह महीन होती है। फैशन निरंतर परिवर्तित होता रहता है, अतः इसे प्रस्तुत करने का माध्यम भी बदलता रहता है। हालांकि फोटोग्राफी भी शैली तथा फैशन को प्रस्तुत करने का तरीका है, इसकी सीमा यह है कि वस्त्र भौतिक रूप से उपस्थित होने चाहिए ताकि उनकी फोटोग्राफी की जा सके। लेकिन फैशन की चित्रकारी का यह लाभ है कि डिजाइन अवधारणाएं डिजाइनर के दृष्टिकोण को विरूपित करने के लिए कागज पर प्रस्तुत की जा सकती हैं जिनमें डिजाइन के अवयवों और सिद्धांतों को समाविष्ट किया जा सकता है।

महिलाओं के परिधानों के संदर्भ में, फैशन मॉडल का चित्रण क्रोकी (फ्रांसीसी) कहलाता है। यह आदर्श शरीर अनुपातों को निरूपित करने का एक शैलीकृत माध्यम है।

वस्त्र लिंग (पुरुष, महिला), आयु (शिशु से वयस्क) और अवसर (औपचारिक वस्त्र, अनौपचारिक वस्त्र, सक्रिय खेल की पोशाक, सोने के वस्त्र, आंतरिक वस्त्र, अवकाश और पर्यटन के वस्त्र) के अनुरूप डिजाइन किए जाते हैं। वस्त्रों की डिजाइनिंग करते समय शरीर के प्रकारों की विशाल श्रृंखला में विद्यमान विविधता को भी ध्यान में रखा जाता है चूंकि शरीर के अनुपात वस्त्रों के आकार और उनकी उपयुक्तता से संबंधित हैं। इसके अलावा, अध्याय **IV**

उनके लिए जो रेखाचित्रों में रुचि रखते हैं, फैशन रेखाचित्र पुस्तकों से अथवा मॉडलों की लाइफ ड्राइंग से संदर्भ प्राप्त किए जा सकते हैं, जैसाकि पेशेवर डिजाइनर करते हैं। जैसाकि नीचे चित्र में दर्शाया गया है, चित्रण को व्यापक बनाने के लिए फोटोग्राफ में डिजाइन के 'मनोयोग' और शैली का प्रयोग प्रेरणा के रूप में किया गया है। पर्याप्त अभ्यास द्वारा इसमें कम समय लगेगा तथा इसे आसानी के साथ किया जा सकेगा।

चित्र 1.44 रेखाचित्र अभ्यास के लिए संदर्भ स्रोत–(क), फोटोग्राफ (ख) 12'' का पुतला और ड्रेस फॉर्म

1.4.1 ब्लॉक आकृति

अनुपातों और संचलन को समझने के लिए आरंभ में एक आसान तरीका है ब्लॉक आकृति से शुरुआत की जाए। शरीर का प्रतिनिधित्व ज्यामितीय ब्लॉकों द्वारा किया जाता है जो हमें इसे बुनियादी आकारों के संदर्भ में देखने में सहायता करते हैं। सिर अंडाकार, होता है, कंधे त्रिभुजाकार होते हैं, धड़ के ब्लॉक वैविध्यपूर्ण समलम्बों के होते हैं, हाथ और पैर बेलनाकार होते हैं। उन स्थानों पर बॉल की संधियां रखी जाती हैं जहां शरीर घूम, मुड़, झुक अथवा सरक सकता है अर्थात् बांह की संधि, कोहनियां, कमर, पैर–कूल्हे का जोड़, घुटने, कलाई और टखने। इस बात पर ध्यान दे कि किस प्रकार बाहें समान बिंदु से आगे–पीछे संचलन करती हैं।

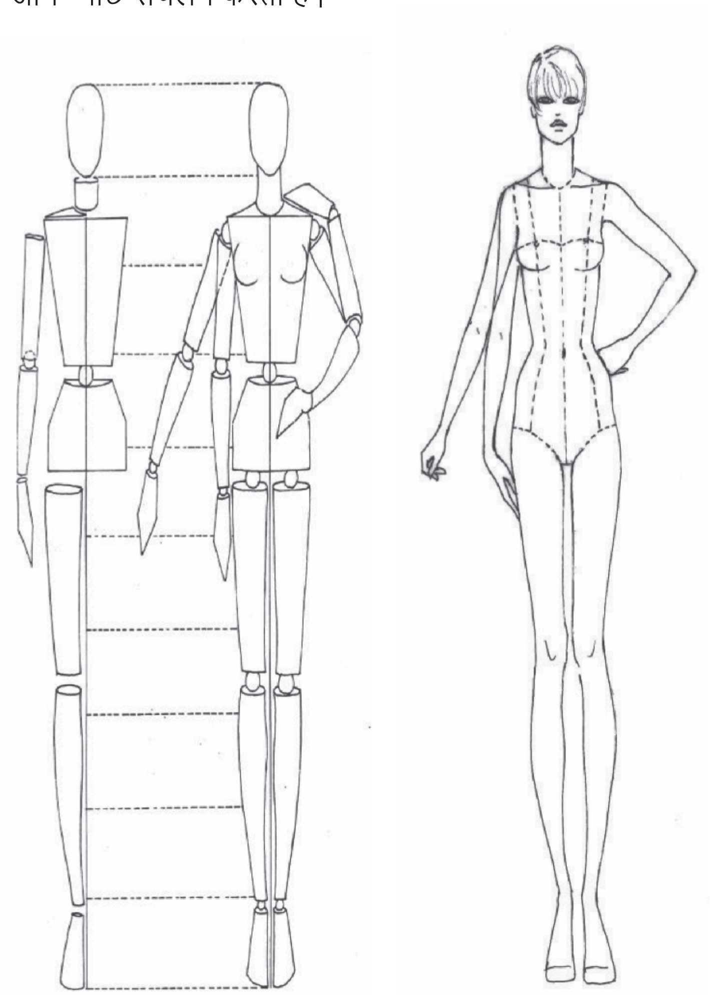

चित्र 1.45 ब्लॉक आकृति

1.4.2 सामान्य और फैशन आकृतियों का सापेक्षी अनुपात

फैशन में, क्रोकी की ऊंचाई 'सिर' के संदर्भ में मापी जाती है अर्थात् ऊंचाई का निर्धारण करने के लिए सिर की लंबाई की पुनरावृत्ति कितनी बार की जाएगी।

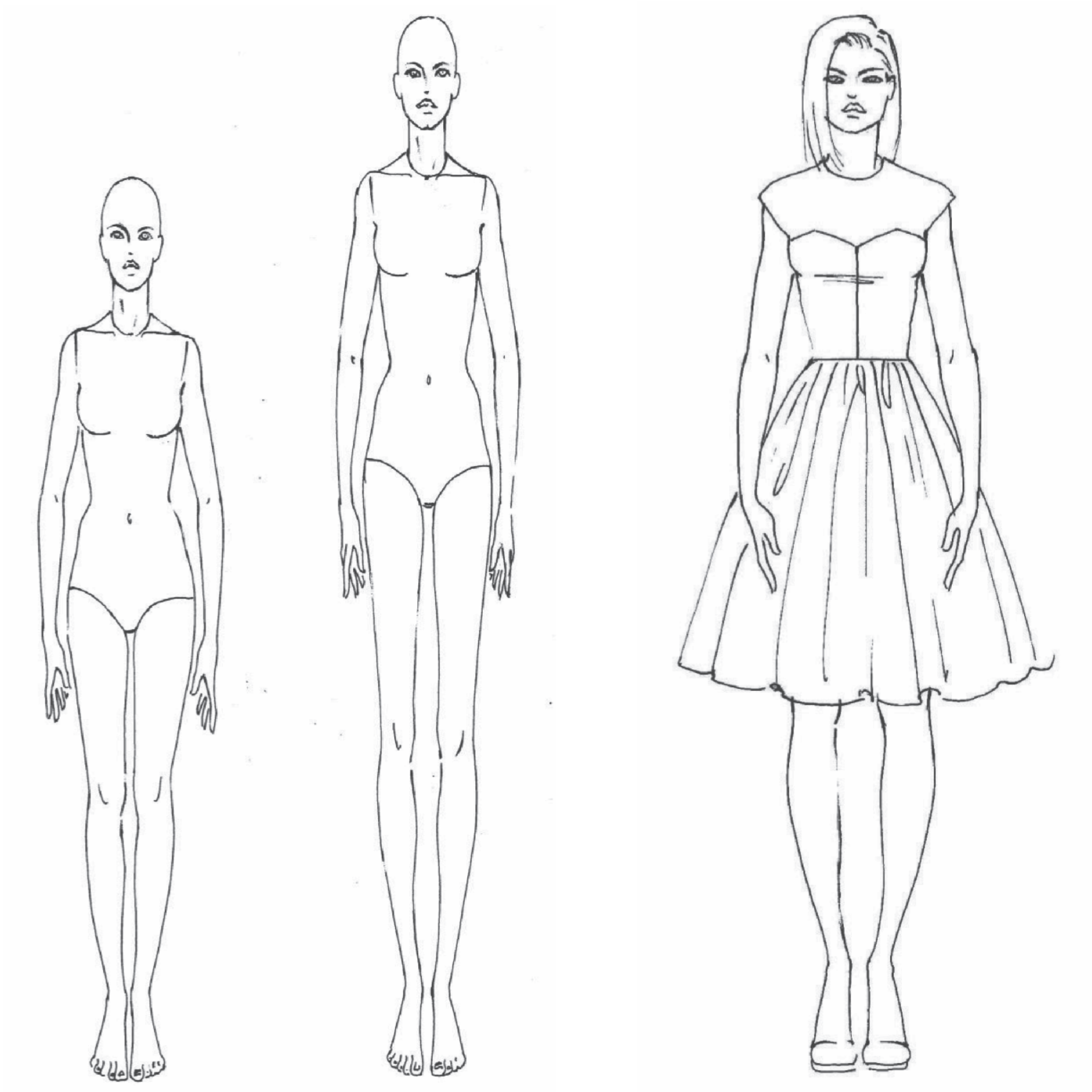

चित्र 1.46 सामान्य शरीर लगभग 8 हैड ऊंचा होता है। फैशन क्रोकी 9–10 हैड तक 'खींची' जा सकती है जो उसके सिर को पतला बनाता है।

1.4.3 मुद्रा विकसित करने के चरण : क्रोकी से लाइन ड्राइंग के माध्यम से

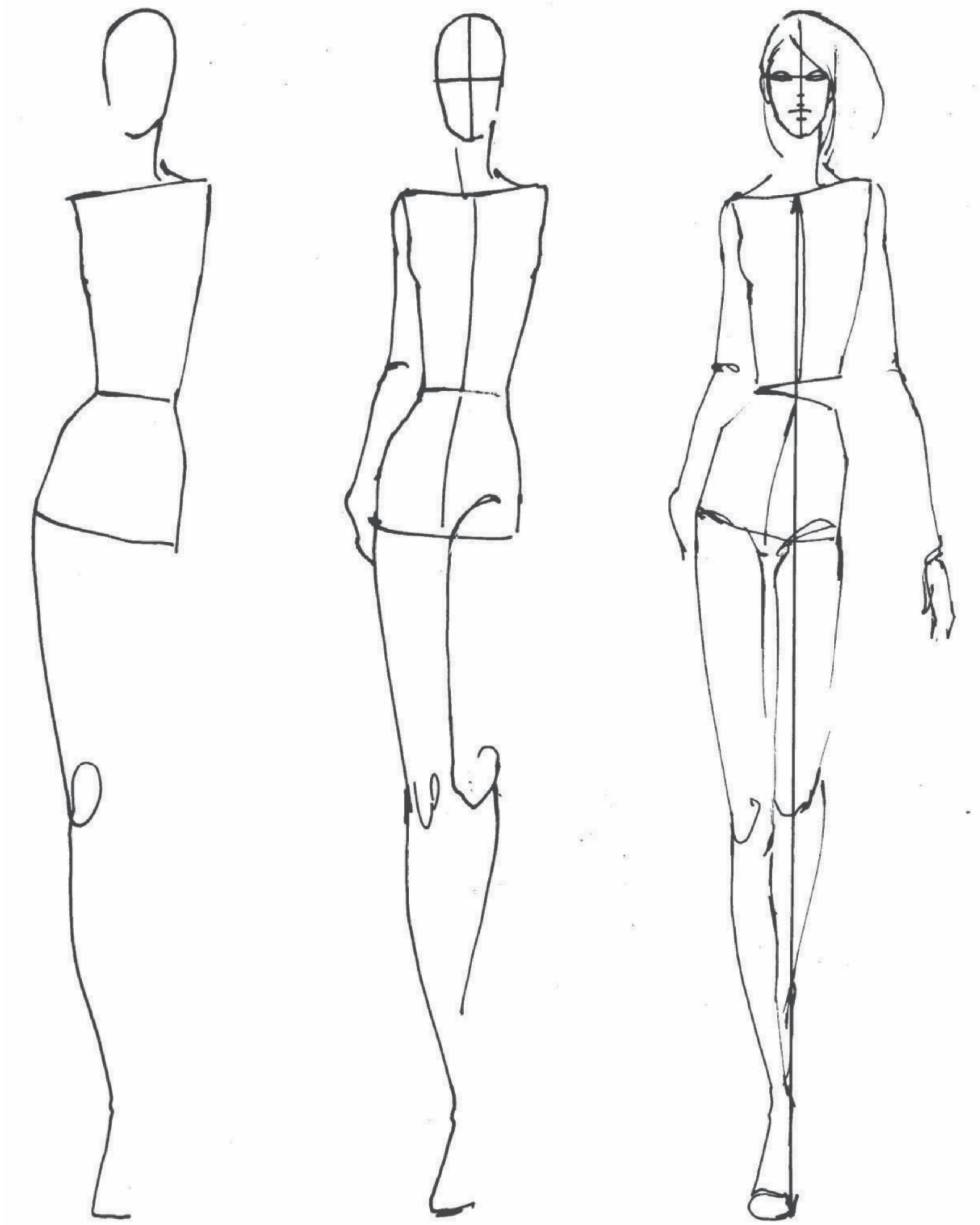

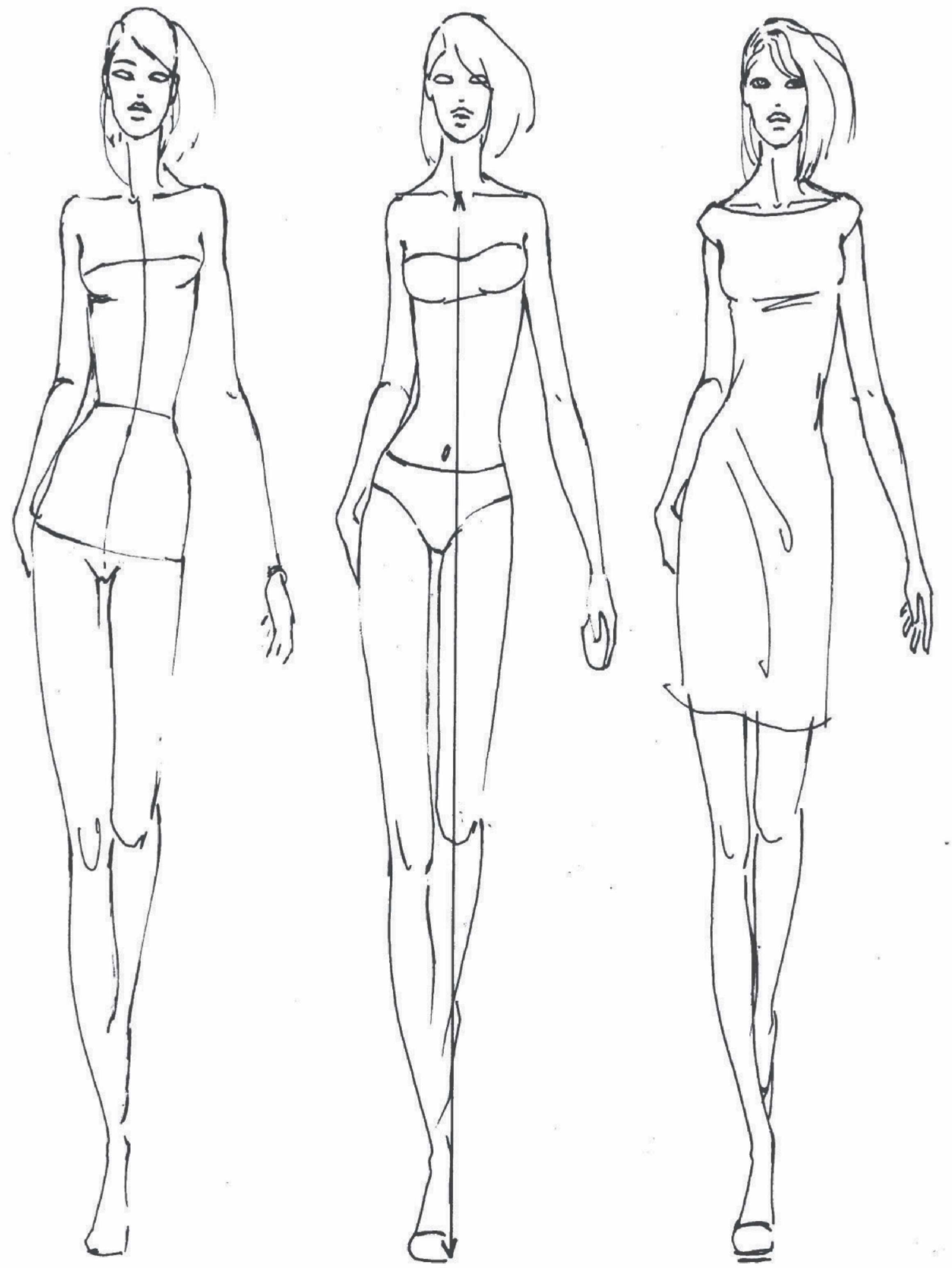

चित्र 1.47 चरणों में मुद्रा को अंकित करना

1.4.4 मुद्राओं का निर्धारण करना

क्रोकी का अंकन करना रुचिकर होता है क्योंकि उन्हें सीधा खड़ा करना, उनके शरीर और सिर को मोड़ना और घुमाना, उन्हें तैयार करने के लिए उनमें विभिन्न बालों की शैलियां दर्शाना, आदि संभव होता है। कोई चित्रकार केवल अपने चित्र अर्थात् क्रोकी की मुद्रा, भाव–भंगिमा पर ही ध्यान केन्द्रित करता है, तथा उसके वस्त्रों पर अधिक ध्यान नहीं देता। लेकिन, किसी डिजाइनर के लिए परिधान की डिजाइन संरचनाएं जैसे सिलुएट, कटाई, रंग, तंतु–विन्यास आदि सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है।

फैशन चित्रकारी का मुख्य केन्द्र डिजाइन पर ध्यान आकर्षित करना है जिसके फलस्वरूप यह बात उभरकर आती है कि एक श्वेत–श्याम लाइन ड्राइंग में भी महत्वपूर्ण संरचनाओं को प्रदर्शित किया जाना चाहिए। अतः क्रोकी की मुद्रा को एक ऐसी रीति से पूर्व–निर्धारित किया जाना चाहिए कि डिजाइन और चित्रकारी परस्पर सामंजस्यपूर्ण हो।
सर्वाधिक आधारभूत मुद्राएं **I, X** और **T** हैं जिन्हें नीचे दर्शाया गया है।

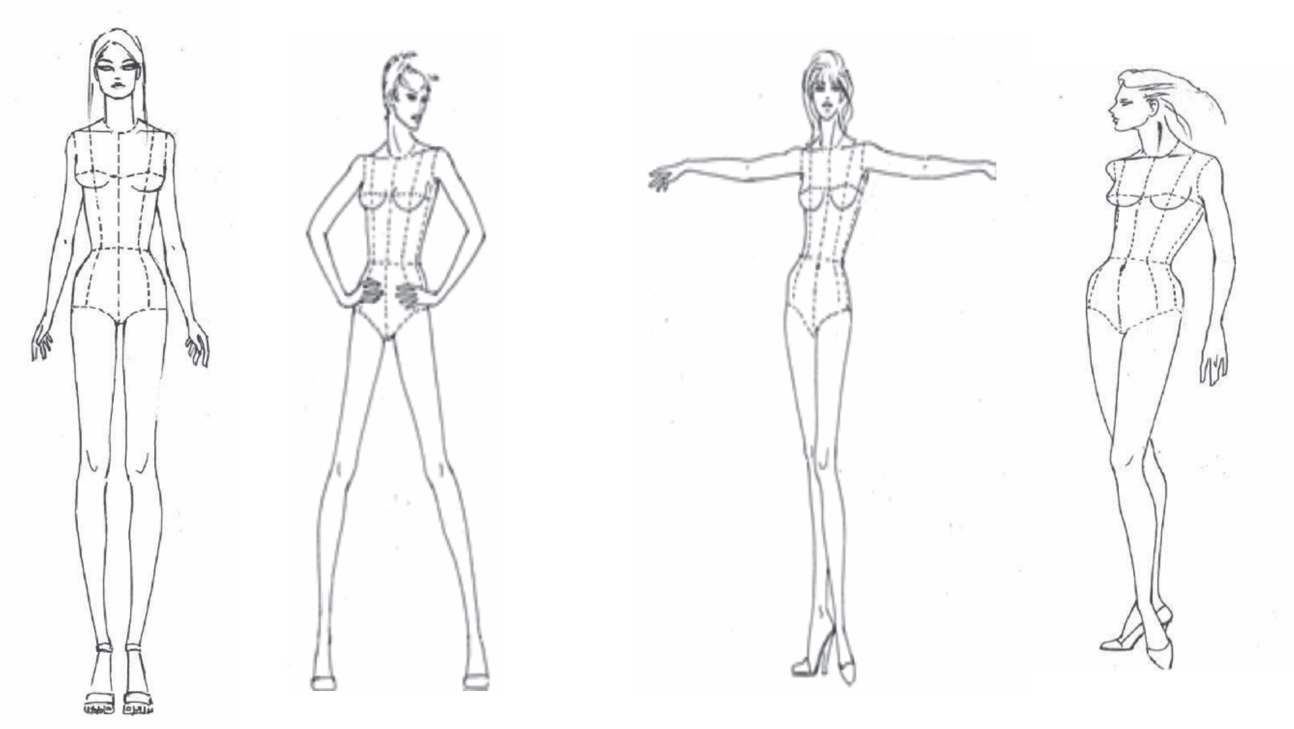

चित्र 1.48क आधारभूत मुद्राएं

मुद्राओं के निर्धारण को वस्त्र की संरचनाओं से संबद्ध किया जाना चाहिए:

(I) **I -** मुद्रा ऐसे परिधानों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है जहां सिलुएट सपाट और सीधा है जैसे नलिकाकार (आवरण) और टेंट के आकार की पोशाकों में होता है तथा इसका प्रमुख ध्यान डिजाइन संरचनाओं और वस्त्र की गुणवत्ता पर होता है।

(ii) **X** मुद्रा दो भागों में विभाजित वस्त्रों (पैंट, जंपसूट्स आदि) के लिए तथा ऐसे परिधानों के लिए श्रेष्ठ होती है जिनकी बगलों में रुचिपूर्ण संरचनाएं होती हैं (बाजुओं, बगल की कलियों, एक तरफ के सीवन पैनलों आदि पर)।

(iii) **T** मुद्रा का प्रयोग तब किया जाता है जब बाजू का फैलाव शरीर के ऊपरी भाग पर संरचनाओं पर बल प्रदान करने के लिए

फननी आकार के परिधान हेतु आवश्यक स्थान सृजित कर सकता है जैसे कंधों की चौड़ाई और आस्तीनों का परिमाण।

(iv) **S** मुद्रा शरीर से लिपटे हुए सिलुएट के लिए श्रेष्ठ है जैसे आवरग्लास, ए–लाइन और कोकून। क्रोकी के कुछ अन्य प्रकारों को शैली–रेखाओं के साथ संदर्भ और अभ्यास के लिए उपलब्ध कराया गया है।

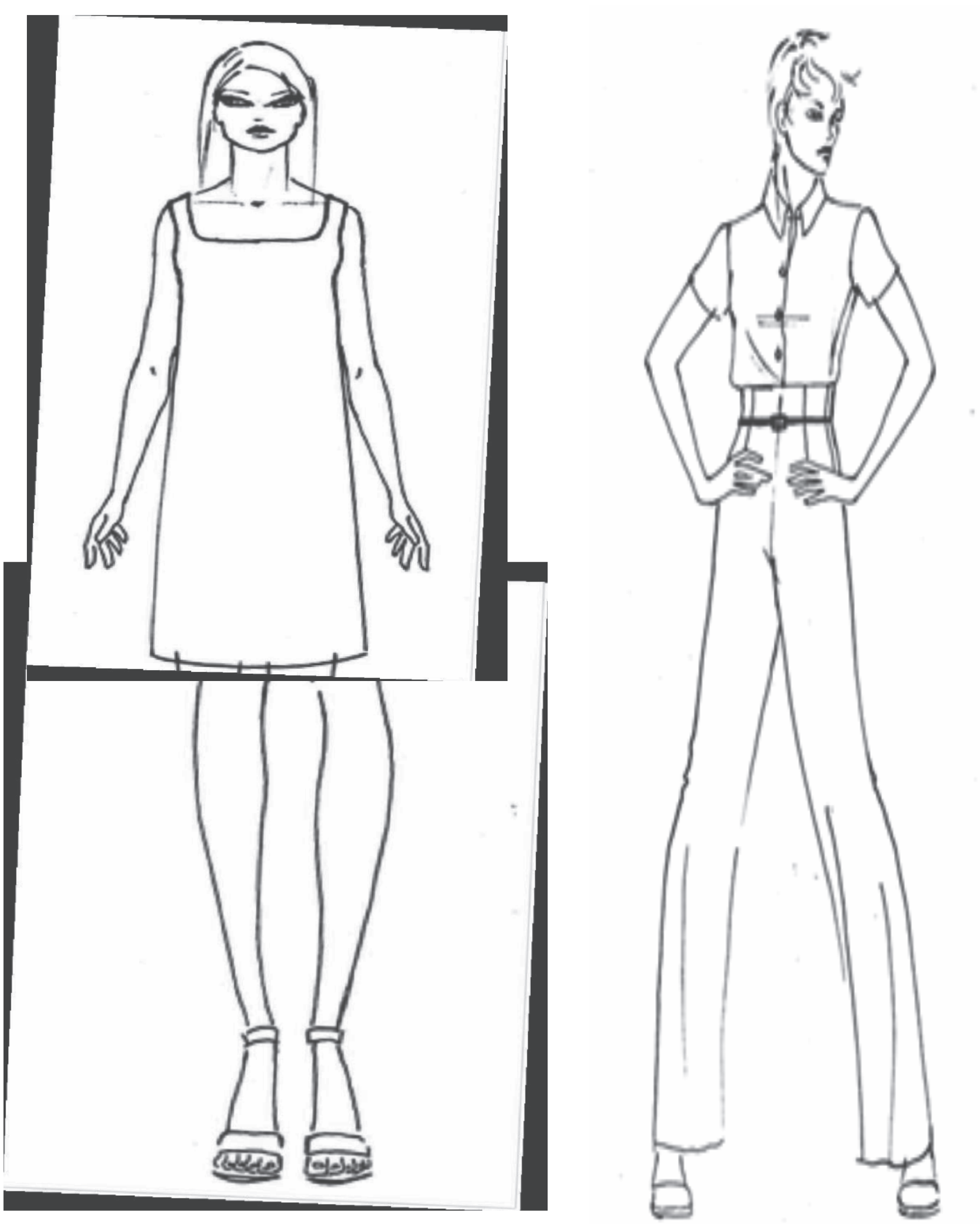

चित्र 1.48 ख पोशाकों के साथ क्रोकी मुद्राओं को सहसंबद्ध करना

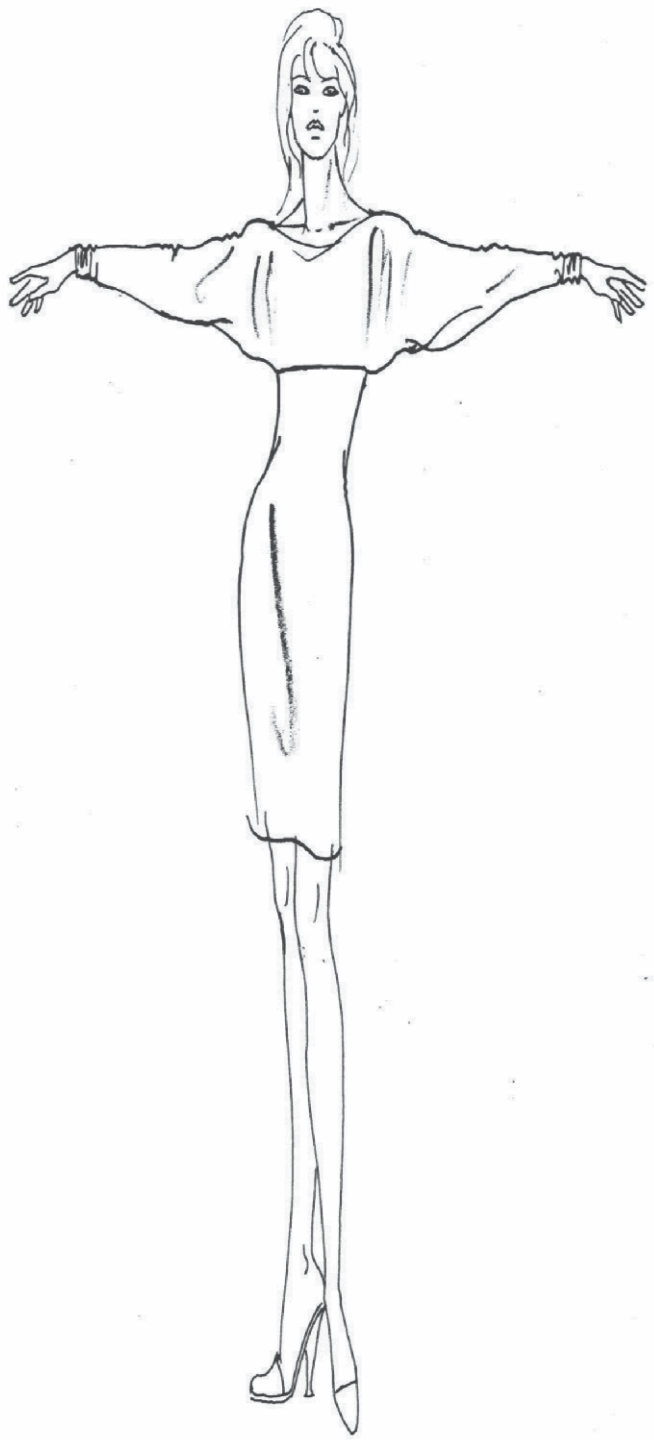

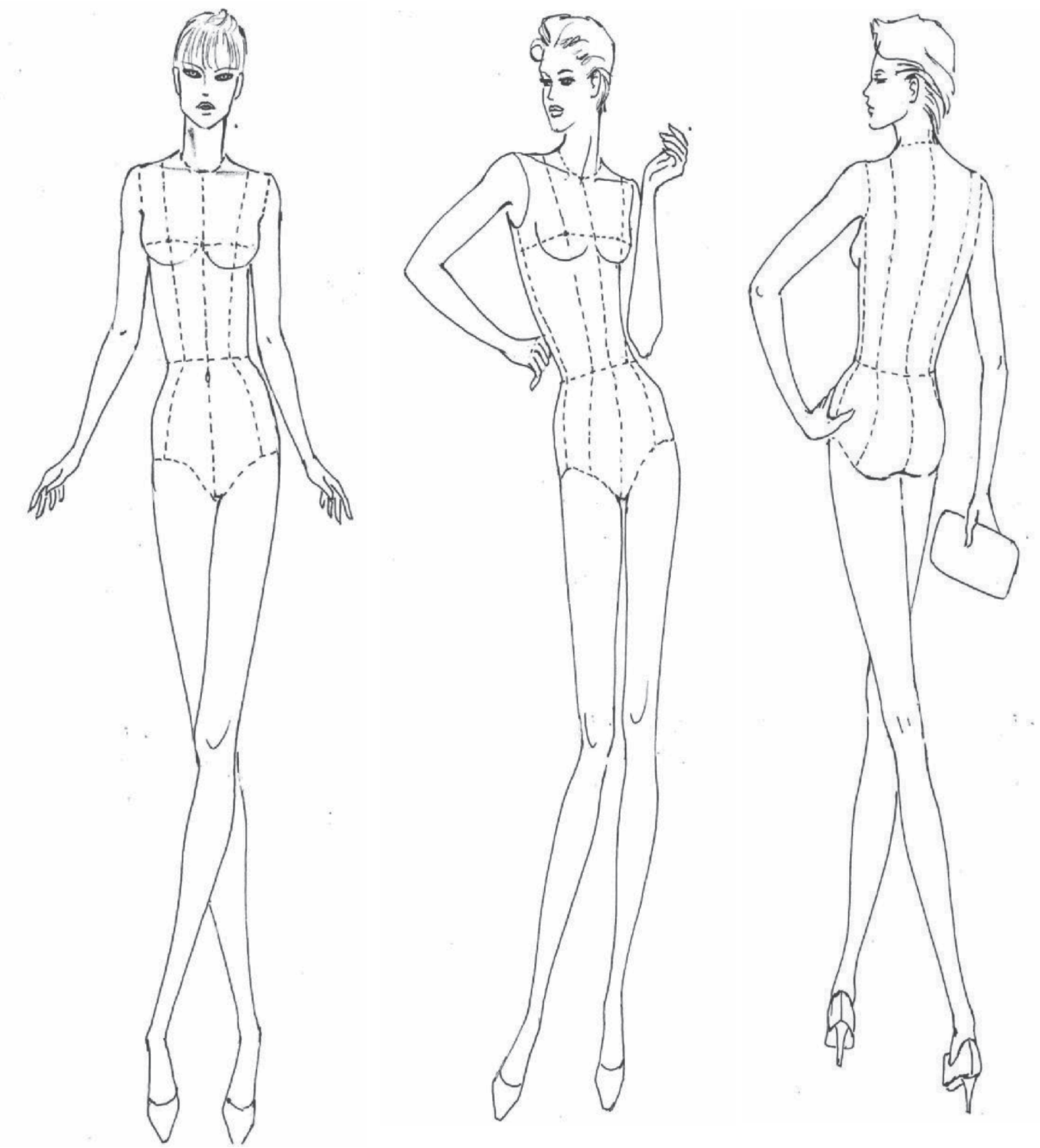

चित्र 1.49 क्रोकी के अन्य प्रकार

1.4.5 चेहरों का चित्र बनाना (महिला)

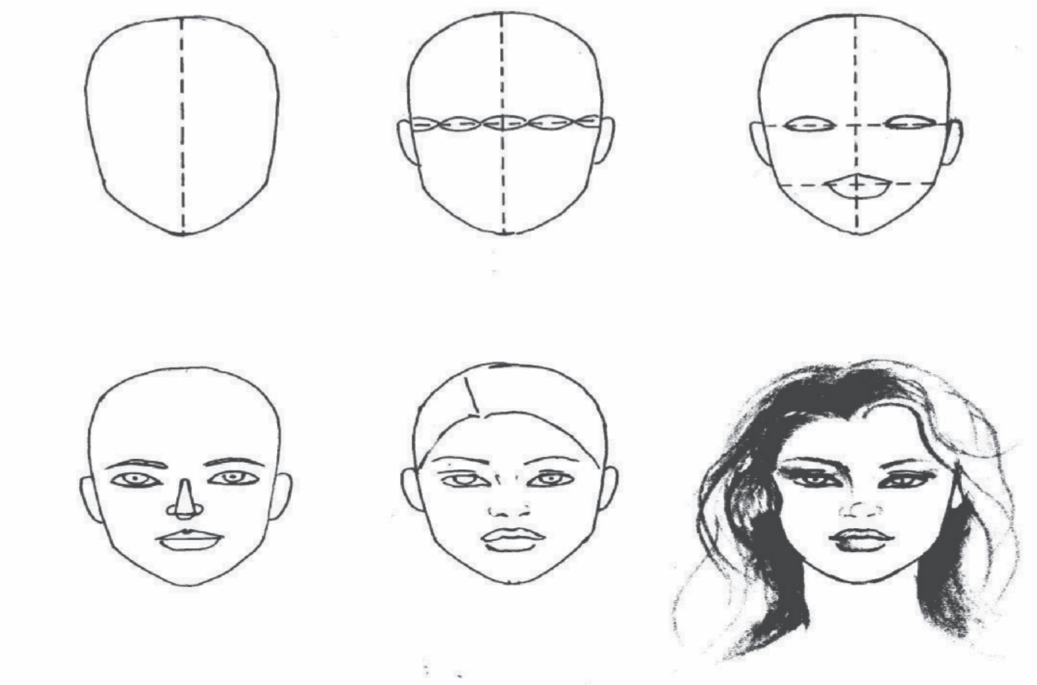

चित्र 1.50 चेहरे का सामने वाला भाग चित्रित करना

चेहरे को चरणों में चित्रित किया जाता है।

1. चरण 1: चेहरे की बुनियादी आकृति अंडाकार होती है। ऊर्ध्व रेखा के एक ओर आधी अंडाकार आकृति बनाएं तथा सममिति सुनिश्चित करने के लिए इसे दूसरी ओर भी चित्रित करें।
2. चरण 1: चेहरे को क्षैतिज रूप से आधा विभाजित करें ताकि आंखों का स्तर निर्धारित किया जा सके। स्मरण रहे कि चेहरे की चौड़ाई लगभग चार आंखों के समान होनी चाहिए।
3. चरण 3: आंखों को तदनुसार चित्रित करें। मुंह भी बनाएं।
4. चरण 4: नाक और मुंह की बुनियादी आकृति बनाएं
   - (i) निचले भाग से शीर्ष तक नाक लगभग उसी लंबाई की होनी चाहिए जितनी कि आंख की है।
   - (ii) ऊपरी होंठ का आकार त्रिभुजाकारहोना चाहिए। निचला होंठ तश्तरी के आकार का होगा।
   - (iii) भौंह की चाप बनाएं।
5. चरण 5: नाक और मुंह को सजीव रूप प्रदान करें। बालों को स्थापित करने की योजना बनाएं।
6. चरण 6: एक आधुनिक शैली में बाल बनाएं जो अत्यंत अस्त–व्यस्त न हों।

इन्हीं चरणों के आधार पर नीचे दिए गए उदाहरणों के अनुसार विभिन्न कोणों पर चेहरा बनाएं। अभ्यास के लिए बालों की शैली में परिवर्तन करें परंतु इन्हें स्वच्छ और न्यूनतम रखें।

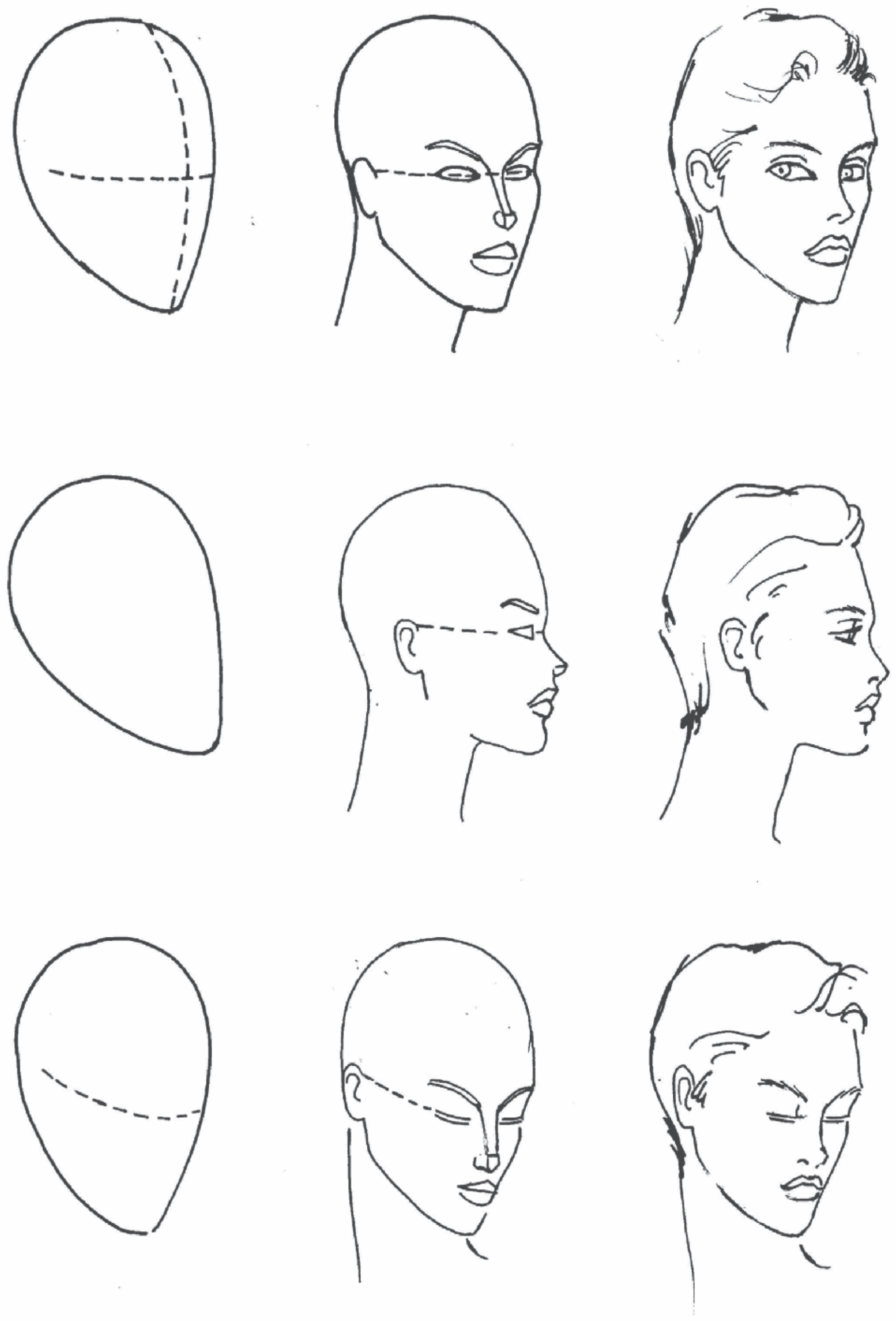

चित्र 1.51 विभिन्न कोणों से चेहरा बनाना

1.4.6 पुरुषों का चित्र बनाना

महिलाओं की क्रोकी बनाने की ही भांति, पुरुषों की फैशन आकृतियां भी एक आदर्श शरीर का अनुसरण और अतिवर्णन करती हैं। पुरुषों और महिलाओं के चेहरे तथा उनकी शरीर की आकृति के अनुपातों में मुख्य अंतरों को ध्यान में रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है भले ही उनकी ऊंचाई एक समान ही क्यों न हो। सामान्यतः पुरुषों की आकृति महिलाओं के शरीर की तुलना में चौड़ी/मोटी होती है।

फैशन की निम्न विशेषताएं होती हैं:

- समग्र रूप से, पुरुषों का ऊपरी और निचला शरीर लगभग समान होता है।
- सिर अधिक आयताकार होता है जिसमें एक मजबूत, सुस्पष्ट जबड़ा होता है।
- गर्दन का भाग महिलाओं की तुलना में चौड़ा और मजबूत होता है।

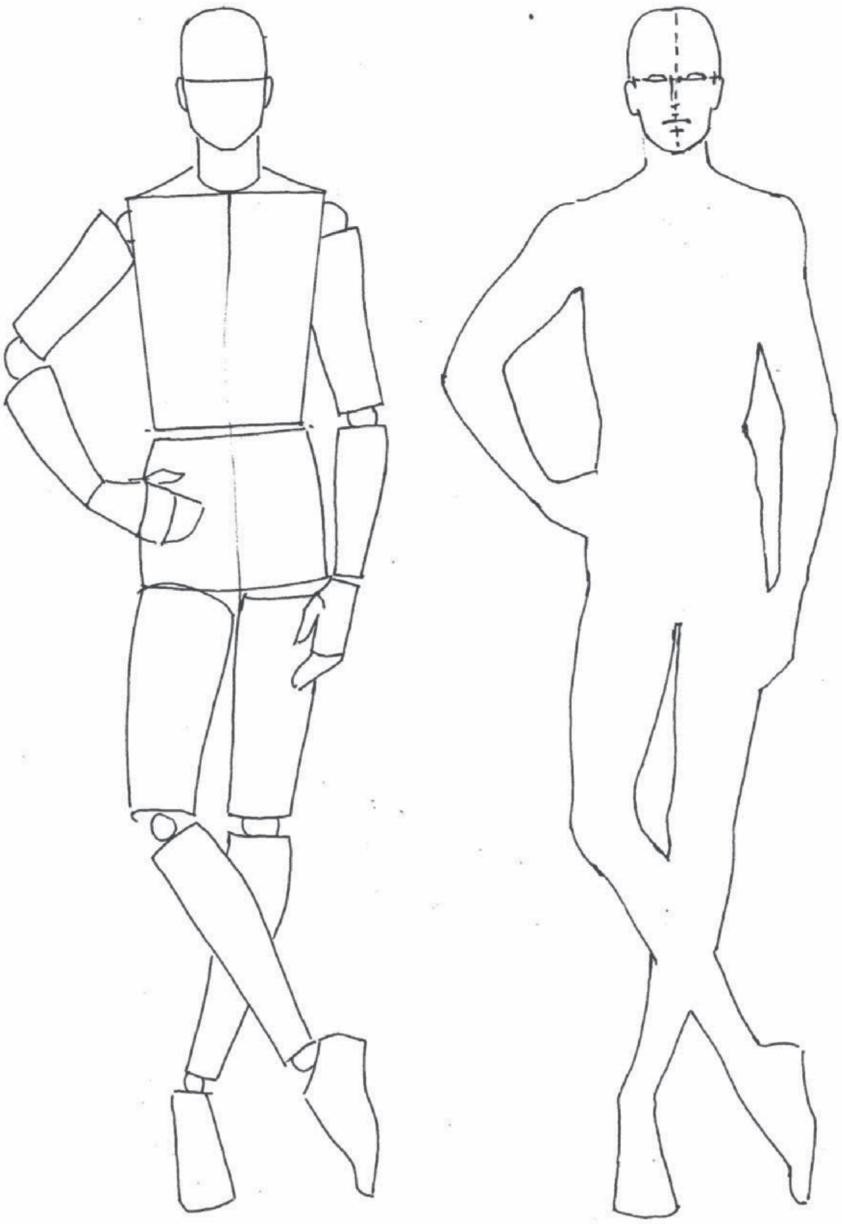

- महिलाओं के शरीर के विपरीत धड़ आयताकार होता है जबकि महिलाओं की आकृति आवरग्लास की होती है।
- कंधे शरीर का सबसे चौड़ा भाग होते है।
- महिलाओं की तुलना में पुरुषों के बाजू स्पष्टतः अधिक मांसल होते हैं।
- कमर की चौड़ाई कूल्हों के समान होती है। महिला के मामले में कमर शरीर का स्पष्टतः सबसे संकीर्ण भाग होता है।

पुरुषों के कूल्हे आयताकार होते हैं जबकि महिलाओं के कूल्हे गोलाकार होते हैं।

- पुरुषों की टांगे अधिक मांसल होती है अतः वे महिलाओं की तुलना में छोटी दिखाई देती हैं, जो लंबी और महीन होती हैं।
- पुरुषों के पैर महिलाओं के पैरों की तुलना में अधिक चौड़े होते हैं विशेष रूप से इसलिए क्योंकि महिलाओं को प्रायः हील पहने हुए दिखाया जाता है।

आधारभूत चित्र को चरणों में वर्णित किया गया है ताकि अभ्यास के साथ पुरुष मॉडल आकृति के नए संस्करणों का सृजन किया जा सके।

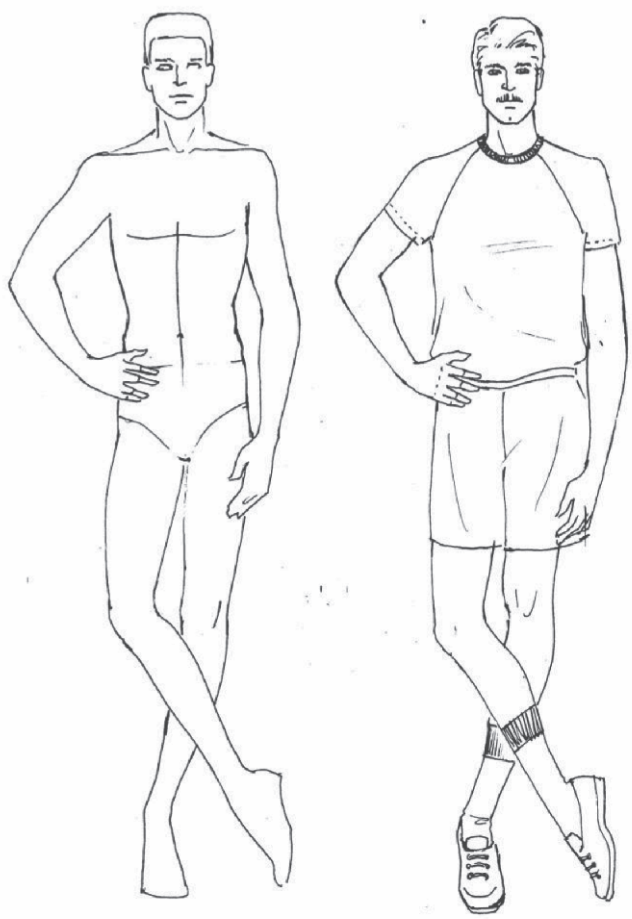

चित्र 1.52 पुरुष मॉडल को बनाने के चरण

चित्र 1.53 पश्चिमी और भारतीय पोशाक में पुरुष मॉडल आकृतियां

1.4.7 बच्चों का चित्र बनाना

चूंकि बच्चे शायद ही कभी शांत बैठते हैं, सिवाए उस स्थिति के जब वे सोए होते हैं, मुद्राओं के अधिकतर दृश्यमान संदर्भ फोटोग्राफों से आते हैं।

लेकिन, इस बात को ध्यान में रखा जाना चाहिए कि वयस्कों के विपरीत बालकों की ऊंचाई तथा अनुपातों में पिछले कुछ वर्षों में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। यही कारण है कि बच्चों की पोशाकों को आयु–वर्गों के अनुसार निम्नलिखित रूप से श्रेणीबद्ध कर दिया गया है:

1. नवजात अथवा शिशु
2. घुटनों पर चलने वाले
3. बच्चे (बालक अथवा बालिकाएं)
4. किशोरावस्थापूर्व

बालकों का चित्र बनाते समय 'सिर' की संख्या के अनुसार कद का अनुमान लगाने की प्रणाली का प्रयोग नहीं किया जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि अनुपात के संदर्भ में, सिर शरीर की तुलना में बड़ा होता है। वस्तुतः एक वर्ष की आयु के बच्चे का सिर एक वयस्क के सिर के आकार से 2/3 होता है। उनके कंधे, कमर और कूल्हों की चौड़ाई लगभग समान होती है। पीठ की चाप सुपरिभाषित होती है तथा उनका पेट गोल और बाहर की ओर निकला होता है।

चेहरे पर मासूमियत का भाव होता है। उनकी मुद्राएं तत्काल ही बनती है तथा प्रायः अजीब भी होती है। एक बैठा हुआ बच्चा नीचे की ओर झुकता है जिससे उसका शरीर छोटा हो जाता है। चलना, सीखना आरंभ करने वाले बच्चों के मामले में संतुलन रेखा प्रायः संतुलन से बाहर हो जाती है जिसके फलस्वरूप बच्चा नीचे गिर जाता है। एक बार बच्चे के बड़ा होने तथा अपने पैरों पर सीधा खड़ा हो जाने पर मुद्रा संतुलित हो जाती है।

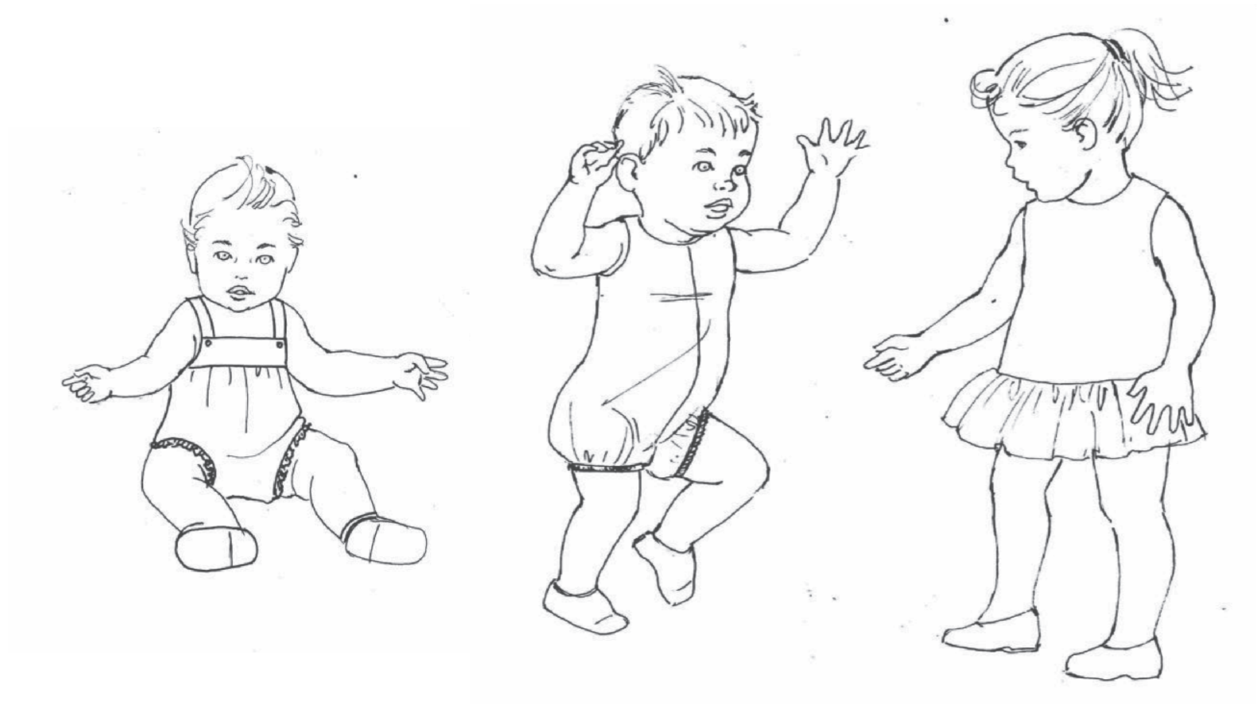

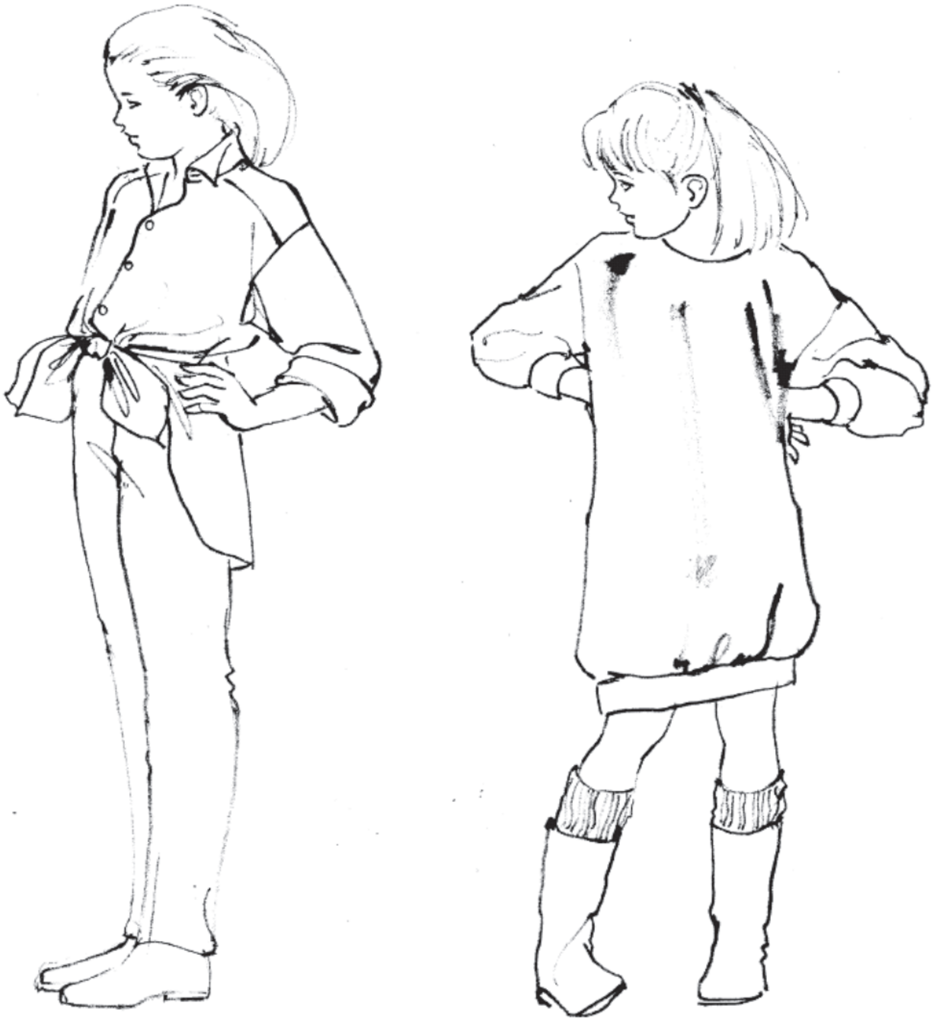

चित्र 1.54 बालक क्रोकी

सारांश

1. डिजाइन में संकल्पना से लेकर एक सुनियोजित उद्देश्यपूर्ण तरीके से सृजन तक की पूरी प्रक्रिया शामिल होती है। डिजाइन का ध्यान–केन्द्रण कार्य और सौंदर्यबोध के एकीकरण के उद्देश्य के साथ उत्पाद, सेवा, संप्रेषण और परिवेश पर होता है।
2. डिजाइन सृजनात्मक रूप से समस्या का निवारण करना है। यह आवश्यक है कि डिजाइन में सौंदर्यबोध और नृजातीय विचारणों, उपयोगिता और विपणन को ध्यान में रखा जाए। इसका आशय यह है कि डिजाइन सृजनात्मक क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं है परंतु व्यापार और सामाजिक परिवेश में भी उसकी पहुंच है।
3. प्रत्येक परिधान, वस्त्र, अतिरिक्त परिधान और फैशन जीवन–शैली उत्पाद वैयक्तिक इकाइयों पर निर्भर करती है जिसे डिजाइन के अवयव कहा जाता है जो आधारभूत बिल्डिंग ब्लॉको के समान हैं जहां प्रत्येक संघटक समस्त कार्यकरण का भाग है जो एक–दूसरे के सामंजस्य के साथ कार्य करता है। डिजाइन के अवयव हैं – बिंदु, रेखा, आकृति, तंतु–विन्यास और रंग जिनका प्रयोग डिजाइनरों और कलाकारों द्वारा किया जाता है।
4. कोई भी परिधान डिजाइन संरचनाओं से मिलकर बनता है जिन्हें इकाइयां कहा जाता है। डिजाइनर विभिन्न इकाइयों की नई व्यवस्थाओं और संयोजनों को आरंभ करते हैं जो एक–दूसरे के साथ सामंजस्य स्थापित करते हैं।

फैशन डिजाइन में, डिजाइन के सिद्धांत हैं – समानता, अनुपात, पुनरावृत्ति, संतुलन, लय, समीपता और बल। फैशन डिजाइनर प्रायः क्रोकी नामक शैलीकृत फैशन आकृति पर पोशाकों के डिजाइनों को रेखांकित करते हैं। फैशन रेखांकन डिजाइन के अवयवों और सिद्धांतों को शामिल करते हुए महिलाओं, पुरुषों और बालकों के लिए डिजाइनर के सृजनात्मक दृष्टिकोण और अवधारणाओं के विरुपण को समर्थ बनाने का लाभ प्रदान करते हैं।

क्रियाकलाप 1.2

फैशन चित्रांकन डिजाइन के अवयवों और सिद्धांतों को समाविष्ट करते हुए डिजाइनर के दृष्टिकोण का निरूपण करने के लिए अवधारणाओं को कागज पर प्रस्तुत करने में समर्थ बनाता है। डिजाइनर डिजाइन की परिकल्पना करने, उसका चित्रांकन करने तथा उसे प्रस्तुत करने के लिए क्रोकी की विशिष्ट मुद्राओं का प्रयोग करते हैं।

यह क्रियाकलाप छात्रों को सृजनात्मक योग्यता और चित्रांकन कौशलों के अनुप्रयोग के लिए विद्यमान क्रोकी विशेषताओं का चित्रण अथवा प्रयोग करने में समर्थ बनाएगा।

1. शैली–रेखाओं से युक्त नीचे दी गई क्रोकी का अध्ययन करें।
2. इस बात पर ध्यान दें कि परिधान के डिजाइन को सौंदर्यबोध और तकनीकी सटीकता के लिए किस प्रकार से चित्रांकित किया गया है। सुनिश्चित करें कि परिधान का मध्य अग्रिम भाग, मध्य पृष्ठ और प्रिसेंस सीवनें क्रोकी की शैली–पंक्तियों से संरेखित हैं।
3. दिए गए टेम्प्लेट का प्रयोग करें अथवा अपनी स्वयं की फैशन आकृति बनाएं। इकाई III से किसी भी महिला परिधान का चयन करते हुए एक प्रभावशाली पोशाक डिजाइन करें।
4. क्या कतिपय परिधानों के लिए विशिष्ट मुद्राओं और कोणों में फैशन आकृतियों की आवश्यकता होती है?